RAJHIN/2016/70516

Bhilwara/171/2026-2028

सच्चाई से रूबरू

smarthalchal.com

स्मार्ट हलचल

वर्ष-10 | अंक- 27 | भीलवाड़ा, सोमवार, 05 जनवरी 2025 | पृष्ठ-04 | मूल्य-04 रूपये

निकोलस मादुरो की गिरफ्तारी पर सामने आई भारत की प्रतिक्रिया, वेनेजुएला पर अमेरिकी कार्रवाई पर जताई गहरी चिंता

नई दिल्ली: भारत ने वेनेजुएला से जुड़े घटनाक्रम को लेकर रविवार को गहरी चिंता व्यक्त की है. अमेरिका ने शनिवार को एक सैन्य अभियान के तहत तेल समृद्ध वेनेजुएला के अपदस्थ राष्ट्रपति निकोलस मादुरो और उनकी पत्नी को पकड़ लिया था. भारत ने कहा कि वह वेनेजुएला में तेजी से बदल रही स्थिति पर करीबी नजर रखे हुए है.

भारत ने की मुद्दों को शांतिपूर्ण तरीके से हल करने का आह्वान:

विदेश मंत्रालय ने कहा, 'वेनेजुएला में हालिया घटनाक्रम गहरी चिंता का विषय हैं. हम तेजी से बदलती स्थिति पर करीबी नजर रखे हुए हैं. भारत वेनेजुएला के लोगों की भलाई और सुरक्षा के लिए अपने समर्थन की पुष्टि करता है. हम सभी संबंधित पक्षों से अपील करते हैं कि वे बातचीत के जरिए शांतिपूर्ण तरीके से मुद्दों को सुलझाएं, ताकि क्षेत्र में शांति और स्थिरता बनी रहे. काराकस स्थित भारत का दूतावास भारतीय समुदाय के सदस्यों के संपर्क में है और वह उन्हें हर संभव सहायता देता रहेगा.'

अमेरिका ने मादुरो और उनकी पत्नी को किया गिरफ्तार:

बता दें कि अमेरिका ने मादुरो पर मादक पदार्थों की तस्करी में शामिल होने का लगातार आरोप लगाने के बाद वेनेजुएला की राजधानी काराकस पर शनिवार को सैन्य हमला किया. मादुरो ने इन आरोपों का कड़े शब्दों में खंडन किया था. अमेरिकी सैनिक मादुरो और उनकी पत्नी को न्यूयॉर्क ले गए हैं. अमेरिकी कार्रवाई के बाद वेनेजुएला ने राष्ट्रीय आपातकाल घोषित कर दिया है.

अभी भी लोग दबाए बैठे हैं 5669Cr... 2000 के नोट पर RBI का अपडेट

नई दिल्ली । भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा साल 2023 में सर्कुलेशन से बाहर किए गए 2000 रुपये के गुलाबी नोटों (Rs 2000 Note) की शत प्रतिशत वापसी अभी तक नहीं हो सकी है. 2025 के आखिरी दिन तक के आंकड़े आ चुके हैं और RBI ने बताया है कि अभी भी 5000 करोड़ रुपये से ज्यादा वैल्यू के गुलाबी नोटों की वापसी का इंतजार है. यानी इतनी रकम के बंद हुए बड़े नोट अभी भी लोगों के पास मौजूद हैं. खास बात ये है कि रिटर्न सुविधाएं जारी होने के बावजूद लोगों द्वारा इनकी वापसी की रफ्तार बेहद धीमी पड़ी है ।

98.41% गुलाबी नोटों की अब तक वापसी

RBI ने 2000 रुपये के नोटों को लेकर एक अहम अपडेट जारी किया है और बताया है कि 19 मई 2023 को सर्कुलेशन से बाहर किए गए इन गुलाबी नोटों की पूरी वापसी अभी तक नहीं हो सकी है. उस समय बाजार में 3.56 लाख करोड़ रुपये के ये बड़े नोट मौजूद थे और बीते 31 दिसंबर 2025 तक कुल 98.41% नोटों की वापसी हुई है. अभी भी लोगों के पास 5,669 करोड़ रुपये मूल्य के 2000 के नोट मौजूद हैं ।

दो महीने में सिर्फ 148 करोड़ वापस

सर्कुलेशन से बाहर किए जाने के बाद आरबीआई ने लोगों को इन नोटों को जमा कराने के लिए सुविधाएं दी थीं और शुरुआती दौर में इनकी वापसी की रफ्तार काफी तेज थी. वहीं अब ये बहुत धीमी पड़ चुकी है. बीते दो महीने के आंकड़े पर नजर डालें, तो 31 अक्तूबर को बाजार में इन नोटों की मौजूदगी का आंकड़ा 5,817 करोड़ रुपये का और अभी भी 5,669 करोड़ रुपये मूल्य के बड़े नोट लोग दबाए बैठे हैं. ऐसे में इन दो महीनों में सिर्फ 148 करोड़ रुपये की वैल्यू के नोट ही वापस आ सके हैं. बता दें कि RBI ने साफ किया था कि सर्कुलेशन से बाहर हुए ये Rs 2000 Note पूरी वापसी से पहले तक लीगल टेंडर बने रहेंगे ।

क्यों बंद किए गए थे गुलाबी नोट?

केंद्रीय बैंक ने साल 2016 के नवंबर महीने में इन बड़े करेंसी नोट को पेश किया गया था, जब देश में 500 और 1000 रुपये नोटों को बंद यानी इनकी नोटबंदी का ऐलान किया गया था. नोटबंदी के प्रभाव को कम कम करने के साथ ही अन्य मूल्यवर्ग के नोटों के मार्केट में पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होने के बाद केंद्रीय बैंक ने 19 मई 2023 को क्लीन नोट पॉलिसी (Clean Note Policy) के तहत इन्हें सर्कुलेशन से हटाने का ऐलान कर दिया था ।

अभी भी यहां बदल सकते हैं बड़े नोट

Rs 2000 Notes को चलन से बाहर किए जाने के बाद रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने 7 अक्टूबर 2023 तक लोगों को सभी बैंकों की ब्रांच में जाकर अपने पास मौजूद नोटों को बदलवाने की सुविधा दी थी और बाजार में नोटों की संख्या में कमी आने के बाद केंद्रीय बैंक ने Banks के बजाय RBI के 19 कार्यालयों तक वापसी प्रक्रिया को सीमित कर दिया, जहां अभी भी इन नोटों को बदलवाया जा सकता है । इनमें रिजर्व बैंक अहमदाबाद, बेंगलुरु, बेलापुर, भोपाल, भुवनेश्वर, चंडीगढ़, चेन्नई, गुवाहाटी, हैदराबाद, जयपुर, जम्मू, कानपुर, कोलकाता, लखनऊ, मुंबई, नागपुर, नई दिल्ली, पटना और तिरुवनंतपुरम कार्यालय शामिल हैं. यही नहीं लोगों की सहूलियत के लिए आरबीआई ने किसी भी डाकघर के जरिए इंडिया पोस्ट (India Post) के जरिए भी 2000 रुपये के नोट भेजने की सुविधा दी हुई है ।

जयपुर: राजस्थान SIR के बाद 8 लाख वोटर्स को नोटिस देने की तैयारी, किस पार्टी के कितने नाम के लिए आवेदन?

▪ स्मार्ट हलचल

जयपुर: राजस्थान में निर्वाचन विभाग की ओर से एसआईआर के बाद 16 दिसंबर को पहला ड्राफ्ट रोल प्रकाशित किया गया. इसके बाद अगले 1 महीने के समय में सभी लोग अपनी आपत्तियां दर्ज कर सकते हैं. इसके साथ ही सभी राजनीतिक दलों को भी यह मौका दिया गया है कि वह आपत्तियां दर्ज करा सकते हैं. इस दौरान आम लोगों के साथ पॉलीटिकल पार्टी भी ऑब्जेक्शन दर्ज करवा सकती है. इसके बाद अब सभी राजनीतिक पार्टियों की ओर से आपत्ति दर्ज कराई जा रही है.

कुल 373 नाम जुड़वाने के लिए आई आपत्ति:

अब तक कुल 373 नाम जुड़वाने के लिए आपत्तियां आई है, वहीं 6 आपत्तियां नाम कटवाने के लिए आई है. इनमें सबसे ज्यादा भारतीय जनता पार्टी ने 193 नाम जुड़वाने के लिए आपत्तियां दर्ज करवाई है. कांग्रेस की ओर से 178 नाम जुड़वाने के लिए आवेदन किया गया है. वहीं, भाजपा ने 4 और कांग्रेस ने 2 नाम हटवाने के लिए आवेदन दिया है. इसके अलावा भारत आदिवासी पार्टी ने दो नाम जुड़वाने के लिए आपत्ति दी है. वहीं, विभाग से प्राप्त डाटा के मुताबिक, 27 अक्टूबर से 16 दिसंबर तक नाम जुड़वाने के लिए 1 लाख 91 हजार 267 फॉर्म 6 प्राप्त हुए हैं. वही, नाम कटवाने के लिए 24 हजार 616 आवेदन प्राप्त हुए. बता दें कि राजस्थान में विशेष गहन पुनरीक्षण (SIR) अभियान के बाद ड्राफ्ट रोल प्रकाशित हो चुकी है.

8 लाख से अधिक वोटर को नोटिस देने की तैयारी:

इसी अभियान के तहत करीब 41.85 लाख मतदाताओं के वोट हटाए जा सकते हैं.

इन मतदाताओं के वोट अनकलेक्टेड श्रेणी में रखे गए हैं. यानी यह वे मतदाता हैं जो एसआईआर अभियान के वक्त या तो मौजूद नहीं थे या स्थाई रूप से कहीं और शिफ्ट हो गए हैं या फिर जिनकी मृत्यु हो गई है. इसके अलावा, इन मतदाताओं में डुप्लीकेट वोटर्स के नाम भी शामिल हैं. इन सभी मतदाताओं को अब 1 महीने के भीतर अपनी आपत्ति दर्ज करवानी है.

वहीं, विभाग से मिले आंकड़ों के मुताबिक, 8 लाख 29 हजार 710 लोगों को नोटिस देने की तैयारी कर रहा है. इनके नाम अनमेप्ड श्रेणी में हैं. अनमेप्ड श्रेणी में वे लोग हैं, जिनके स्वयं के या उनके माता - पिता के नाम 2002 की सूची से मिलान नहीं हो पाए हैं.

बाड़मेर: बाड़मेर-बालोतरा जिलों की सीमाओं में फेरबदल से अशोक गहलोत नाराज, कहा- एक और 'तुगलकी फरमान'

▪ स्मार्ट हलचल

बाड़मेर: राजस्थान के बाड़मेर और बालोतरा जिलों की सीमाओं में किए गए फेरबदल पर कांग्रेस के दिग्गज नेता अशोक गहलोत ने अपनी नाराजगी जताई। अपनी इस नाराजगी और असहमति को अशोक गहलोत ने सोशल मीडिया अकाउंट X पर लिखा कि बाड़मेर और बालोतरा जिलों की सीमाओं में 31 दिसंबर की मध्यरात्रि को आनन-फानन में किया गया फेरबदल राज्य सरकार का एक और 'तुगलकी फरमान' है।

आमजन के साथ घोर अन्याय:

अशोक गहलोत ने आगे लिखा कि बायतु को बाड़मेर और गुड़ामालानी-धोरीमन्ना को बालोतरा में शामिल करने का फैसला प्रशासनिक दृष्टि से कतई तर्कसंगत नहीं है। इससे गुड़ामालानी क्षेत्र की जनता के लिए जिला मुख्यालय की दूरी कम होने के बजाय और बढ़ गई है, जो आमजन के साथ घोर अन्याय है।

सियासी रोटियां' सेंकने में व्यस्त भाजपा सरकार:

अशोक गहलोत ने लिखा कि यह स्पष्ट है कि यह निर्णय जनता की सहूलियत के लिए नहीं, बल्कि आगामी परिसीमन और सियासी समीकरणों को साधने के लिए लिया गया है। हमारी सरकार ने प्रशासन को जनता के द्वार तक पहुंचाने की मंशा से नए जिले बनाए थे, लेकिन मौजूदा भाजपा सरकार जनभावनाओं को दरकिनार कर केवल 'सियासी रोटियां' सेंकने में व्यस्त है। हम इस जनविरोधी निर्णय की कड़े शब्दों में निंदा करते हैं।

एक बार फिर से बदला भूगोल:

बाड़मेर और बालोतरा जिलों का एक बार फिर से भूगोल बदल दिया गया है। सीमा निर्धारण पर पुनर्विचार करने के बाद शुक्रवार देर रात, 31 दिसंबर की तारीख से इसका आदेश जारी किया गया है। इसमें बायतु और गुड़ामालानी विधानसभाओं के जिले बदल गए हैं। बायतु विधानसभा अब बाड़मेर जिले में और गुड़ामालानी विधानसभा बालोतरा जिले में होगी।

नई दिल्ली: त्रिशूर रेलवे स्टेशन पर लगी भीषण आग, 200 गाड़ियां जलकर खाक

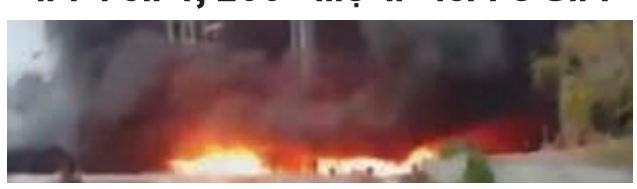

▪ स्मार्ट हलचल

नई दिल्ली: केरल के त्रिशूर रेलवे स्टेशन पर रविवार को भीषण आग लग गई, जिसमें स्टेशन के पास बनी पार्किंग में खड़ी 200 से ज्यादा टू-व्हीलर गाड़ियां जलकर खाक हो गईं। यह घटना प्लेटफॉर्म नंबर 2 के पास बने टू-व्हीलर पार्किंग एरिया में हुई, जिससे यात्रियों और आस-पास रहने वाले लोगों में दहशत फैल गई।

शुरुआती रिपोर्ट्स के मुताबिक, आग लगने की जानकारी सुबह करीब 6.45 बजे मिली। आग की लपटों नें तेजी से पार्किंग एरिया को अपनी चपेट में ले लिया। यहां रोजाना आमतौर पर 500 से ज्यादा मोटरसाइकिल और स्कूटर खड़े होते हैं। माना जा रहा है कि खड़ी गाड़ियों में मौजूद फ्यूल की वजह से आग तेजी से फैली और उसकी तीव्रता बढ़ गई, जिससे कुछ ही मिनटों में भारी नुकसान हो गया। आग लगने की जानकारी मिलते ही फायर एंड रेस्क्यू सर्विस के कर्मचारी तुरंत मौके पर पहुंच गए।

फायर टेंडर्स ने आग पर पाया काबू:

फायर टेंडर्स को आग बुझाने में करीब आधा घंटे के समय लगा और आग के सफलतापूर्वक बुझा दिया गया। हालांकि धुआं पूरे इलाके में कुछ समय तक छाया रहा, जिससे यात्रियों और स्टेशन स्टाफ को परेशानी की सामना करना पड़ा।

जमीन की खुदाईमें मिला रहस्यमय सोने जैसी धातु से भरा हुआ टेग प्रशासन ने किया जब्त, सोना या कुछ और साजिश? जांच का विषय

मोजूद कर्मचारियों की जिम्मेदारी या लापरवाही हो रहें हैं कहीं सवाल खड़े?

▪ स्मार्ट हलचल

टोंक। जिले की उपखंड निवाई क्षेत्र की ग्रामपंचायत गांव सीदडा- देवरी में मिला रहस्यमय घड़ा मिलना और उसमें सोने जैसी धातु या फिर कुछ और साजिश? जब्त किए भरा हुआ घड़े/टेग बना हुआ है चर्चा का विषय क्या बन सकता है मोजूद कर्मचारियों की मुसीबत? प्रदेश में बना हुआ है रहस्यमय घटनाक्रम चर्चा का विषय , मौके पर जब्त करने वाले प्रशासन के कर्मचारियों ने मीडिया से बनाई दूरी? प्रशासन के मोखे पर मौजूद कर्मचारियों की जिम्मेदारी लापरवाही या मिलीभगत हो रहें है कहीं सवाल खड़े?

बीते शनिवार को ग्रामीणों की सुचना पर पहुंचे पुलिस प्रशासन व कुछ राजस्व कर्मचारियों द्वारा स्थानीय ग्रामीणों की मौके पर जेसीबी मशीन बुलवाकर खुदाई करवाने पर एक बड़ा मटका जेसा किसी पीले रंग सोने जैसी धातु से भरा हुआ टेग पुलिस प्रशासन व राजस्व कर्मचारियों द्वारा मोखे से जब्त कर लें जाना संपूर्ण घटनाक्रम चर्चा का विषय बना हुआ है,

घड़े/टेंग फिलहाल प्रशासन ने रखा निवाई सरकारी ट्रेजरी में

पुलिस प्रशासन व राजस्व कर्मचारियों को खुदाई में मिले रहस्यमय पीला रंग सोने जैसी धातु से भरे हुए घड़े/टेग पुलिस प्रशासन ने जब्त कर निवाई उपखंड सरकारी कार्यालय ट्रेजरी में रखवा दिया गया है, वहीं प्राप्त जानकारी के मुताबिक प्रशासन ने बाकी आगे की जांच-पड़ताल कार्यवाही के लिए पुरातत्व विभाग को रविवार को सुचना दें दीं गई है, जिस पर आगे की कार्यवाही होना बाकी है।

ना नाप-तोल ना ही मौके पर पुष्टि की गई आखिर क्या था घड़े में ऐसा जिसको पुलिस प्रशासन ने छुपाया?

वही ग्रामीणों ने कहा की जब्त किए गए घड़े का वजन तीन सौ से चार सौ किलो बताया जा रहा है। सबसे बड़ा सवाल है क्या था ऐसा टेंग/घड़े में जिसकी पुष्टि मौके पर नहीं कर सकें? क्या खदान स्थल पर जिला कलेक्टर की मौजूदगी में पुरातत्विक विभाग की टीम और सुनार को बुलवाकर मीडिया के सामने खुलासा करते हुए राजकोष में जमा करवाने की कार्यवाही क्यों नहीं की गई अगर वाकई सोना था घड़े में तो? आखिर क्या था घड़े में ऐसा साजिश ?

लोगों का कहना है कि अगर प्रशासन तत्काल प्रभाव से ऐसी कार्यवाही कर लेता तो रहस्य से पर्दा हटता और आमजन में विश्वास बढ़ता। पर मौजूद प्रशासन-कर्मचारियों ने बना दिया बड़ा रहस्यमय घटनाक्रम। ना जब्त किए गए टेंग घड़े पात्र के वजन की नहीं हुई नाप-तोल ना ही मौके पर पुष्टि की गई आखिर क्या था घड़े में ऐसा जिसको पुलिस प्रशासन ने छुपाया?

चर्चा बनी हुई हैं की सोने जैसी धातु थी तो जिला कलेक्टर की मौजूदगी में उच्च आला अधिकारियों की मौजूदगी में जप्त टेंग घड़े का तत्काल वजन क्यों नहीं किया गया? क्या प्रशासन-कर्मचारियों ने दबाया खुदाई में मिले खजाने से भरें हुए टेंग घटनाक्रम पर पर्दा?

वहीं सोशल मीडिया पर अलग-अलग विडियो वायरल हो रहें हैं, स्थानीय ग्रामीणों चश्मदीदों की मानें तो घड़े में सोना होना बताया जा रहा है, आरोप भी लगाया गया है की कुछ पुलिसकर्मियों व राजस्व कर्मचारियों ने मिलीभगत बंदरबांट कर दबाया खुदाई में मिले खजाने से भरें हुए टेंग घटनाक्रम पर पर्दा। ना तत्काल मौके पर वजन तोलने की मशीन बुलाई गई ? आखिर क्या है माजरा धातु या सोना या फिर कुछ और?

प्राप्त जानकारी अनुसार संपूर्ण घटनाक्रम की मिस्ट्री है अभी तक बरकरार,

इस घटनाक्रम पर प्रशासन के मोखे पर मौजूद कर्मचारियों की जिम्मेदारी लापरवाही पर सवाल खड़े हो रहे हैं।

आसींद पुलिस का अवैध बजरी पर प्रहार, तीन ट्रेक्टर ट्रॉली जब्त, एक गिरफ्तार

▪ स्मार्ट हलचल

भीलवाड़ा। आसींद थाना पुलिस ने अवैध बजरी पर बड़ी कार्यवाही करते करते हुए तीन ट्रेक्टर ट्रॉली जब्त किए है और एक आरोपी को गिरफ्तार किया है लेकिन कुछ लोगो मौके से भाग निकले । इस कार्यवाही से बजरी माफियाओं में हड़कंप मच गया । क्षेत्र में बजरी माफियाओं द्वारा अवैध बजरी का लगातार खनन किया जा रहा है पुलिस द्वारा भी उन पर प्रभावी कार्यवाही की जा रही है । आसींद थाना प्रभारी श्रद्धा पचौरी ने बताया की पडासोली क्षेत्र के नेखाड़ी के पास खारी नदी में अवैध बजरी खनन की लगातार शिकायते मिल रहा थी । जिस पर कार्यवाही करने के लिए विशेष टीम का गठन किया ओर मौके पर दबिश दी लेकिन इस बीच कुछ माफिया मौके से फरार हो गए लेकिन एक को गिरफ्तार कर तीन ट्रेक्टर ट्राली बजरी से भरी टीम ने मौके पर जब्त करते हुए एमएमडीआर एक्ट में मामला दर्ज किया और जांच माइनिंग विभाग को सौपी।

भरक शिविर में 280 रोगियों का हुआ उपचार, 112 यूनिट हुआ रक्तदान

▪ स्मार्ट हलचल

गंगापुर - ग्राम पंचायत भरक में पहेली बार स्व.ठा.सा. भगवत सिंह की स्मृति में निःशुल्क जाँच एवं चिकित्सा शिविर व रक्तदान शिविर दिनांक 4 जनवरी रविवार, प्रातः 10 बजे से 2 बजे तक ग्राम पंचायत भरक में आयोजित किया गया। शिविर में पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पीटल भीलों का बेदला उदयपुर टीम द्वारा निःशुल्क आँखों का निःशुल्क मोतीयाबिन्द एवं चमड़ी का ऑपरेशन, नाक, कान, गले का ऑपरेशन एवं उपचार, हड्डी, कमर दर्द का उचार, दाद, खाज, खुजली का उपचार किया गया। जाचं के बाद भर्ती वाले मरीजों को हॉस्पीटल ले जाया गया। आयोजन कर्ता लोकेन्द्र सिंह भाटी ने बताया कि निःशुल्क जाँच एवं चिकित्सा शिविर के साथ रक्तदान शिविर शिविर का आयोजन भी किया गया रक्तदान शविर में 112 यूनिट रक्तदान हुआ। रक्त संग्रह का कार्य पेसिफिक मेडिकल कॉलेज उदयपुर की टीम द्वारा किया गया।

घर से बरामद हुआ 34 किलो एस ज्यादा अवैध मादक पदार्थ बरामद

▪ स्मार्ट हलचल

उदयपुर। जिला पुलिस अधीक्षक योगेश गोयल के निर्देशन में अवैध मादक पदार्थों के खिलाफ चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत पुलिस थाना पानरवा ने बड़ी सफलता हासिल की है। पुलिस ने मुखबिर की सटीक सूचना पर कार्रवाई करते हुए एक घर से 34.500 किलोग्राम अवैध मादक पदार्थ गांजा जब्त किया है। यह कार्रवाई अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (मुख्यालय) गोपाल स्वरूप मेवाड़ा एवं वृत्ताधिकारी कोटड़ा डूंगर सिंह चुण्डावत के सुपरविजन में, थानाधिकारी भागीरथ कुमार बुन्देला के नेतृत्व में की गई।

घर में छिपाकर रखा था भारी मात्रा में गांजा

पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली थी कि गांव डौर, थाना पानरवा क्षेत्र में एक व्यक्ति द्वारा अवैध गांजा संग्रहित किया गया है। सूचना के आधार पर पुलिस टीम ने त्वरित कार्रवाई करते हुए संबंधित स्थान पर दबिश दी। तलाशी के दौरान अभियुक्त भौजा पिता भूरा, निवासी डौर, थाना पानरवा, जिला उदयपुर के घर से कुल 34.500 किलोग्राम अवैध गांजा बरामद किया गया।हालांकि, पुलिस कार्रवाई की भनक लगते ही आरोपी मौके से फरार हो गया।

NDPS एक्ट में केस दर्ज, तलाश जारी

मामले में प्रकरण संख्या 04/2026 के तहत धारा 8/20 एनडीपीएस एक्ट में केस दर्ज कर लिया गया है। पुलिस द्वारा आरोपी की गिरफ्तारी के लिए संभावित ठिकानों पर दबिश दी जा रही है और तस्करी से जुड़े नेटवर्क की भी गहन जांच की जा रही है।

कार्रवाई में शामिल पुलिस टीम

भागीरथ कुमार बुन्देला थानाधिकारी, पानरवा, रामकृष्ण कांस्टेबल, दिलीप कुमार, टिकाराम, दिनेशचन्द्, उमेश कुमार, प्रेम कुमार चालक कांस्टेबल शामिल थे ।

पुलिस की अपील

उदयपुर पुलिस ने आमजन से अपील की है कि यदि कहीं भी अवैध मादक पदार्थों की तस्करी, भंडारण या बिक्री की जानकारी हो, तो तत्काल पुलिस को सूचित करें।

नशे में धुत कार चालक विद्युत पोल से टकराया, विद्युत आपूर्ति हुई ठप, लापरवाही बनी आमजन के लिए मुसीबत

▪ स्मार्ट हलचल

भीलवाड़ा। भीलवाड़ा शहर के आर के कॉलोनी में सारस्वत भवन के पास एक कार चालक की लापरवाही देखने को मिली । शनिवार देर रात नशे में धुत कार चालक तेज रफ्तार में था जो नियंत्रण खो बैठा और कार विद्युत पोल से जा भिड़ी और उसके बाद बी सेक्टर में विद्युत आपूर्ति बाधित हो गई । भिड़ंत इतनी तेज थी की आस पड़ोस के लोगो ने भी उसकी आवाज सुनी । इस घटना में हालाकी कार चालक को कोई हानि नहीं पहुंची लेकिन गाड़ी का बोनट बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया वही बाद में कार चालक मौके से भाग छूटा । लेकिन इस बीच पूरे घटनाक्रम में कार चालक की लापरवाही क्षेत्रवासियों पर भारी पड़ गई । विद्युत सप्लाई जाने से लोगो को खासी परेशानियों का सामना करना पड़ा घटना देर रात एक बजे की थी और बिजली रात भर बंद रही इस दौरान विद्युत विभाग में लोगो ने कई बार शिकायत दर्ज करवाई लेकिन विभाग की लचीली कार्यप्रणाली से जनता के रोजमर्रा के काम और दिनचर्या प्रभावित हुई । विभाग में कई बार शिकायत करने के बावजूद कर्मचारी मौके पर नही पहुंचे अगले दिन रविवार होने के चलते छुट्टी रही लेकिन संडे का मजा बिजली नही होने से किरकिरा हो गया । रविवार दोपहर 12 बजे बाद विभाग के कर्मचारी मौके पर पहुंचे और पोल को दुरस्त करने का काम शुरू किया उसके बाद भी कई घंटे तक लोगो को बिना बिजली और पानी के रहना पड़ा । प्रशासन को चाहिए की लापरवाह वाहन चालक के खिलाफ कार्यवाही हो और सरकारी संपत्ति को नुकसान पहुंचाने के लिए मामला दर्ज किया जाए और वसूली की जाए ।

डॉक्टर की फर्जी सील और कार्डों के जरिए आरजीएचएस में हेराफेरी, स्टोर मैनेजर समेत 5 पर एफआईआर दर्ज

▪ स्मार्ट हलचल

हनुमाननगर। राजकीय उप जिला चिकित्सालय देवली के परिसर में संचालित सहकारी उपभोक्ता भंडार (फार्मा स्टोर) में आरजीएचएस योजना के तहत बड़ी वित्तीय अनियमितताओं और धोखाधड़ी का सनसनीखेज मामला सामने आया है। मामले की गंभीरता को देखते हुए देवली अस्पताल के प्रमुख चिकित्सा अधिकारी डॉ. राजकुमार गुप्ता ने हनुमान नगर थाने में स्टोर प्रबंधक और फार्मासिस्ट सहित पांच लोगों के विरुद्ध नामजद प्राथमिकी दर्ज करवाई है। यह कार्रवाई वित्त विभाग के अधीन गठित QCPA द्वारा की गई जांच और मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी टोंक के निर्देशों के बाद की गई है। रिपोर्ट में आरोप लगाया कि जांच के दौरान फार्मा स्टोर पर एक डॉक्टर और चिकित्सा अधिकारी राजकीय चिकित्सालय देवली के नाम की फर्जी रबर सील बरामद हुई हैं। निरीक्षण में यह भी सामने आया कि फार्मा स्टोर पर कई लाभार्थियों के मूल आरजीएचएस कार्ड अवैध रूप से रखे हुए थे। इसके अलावा वहां एक ऐसा रजिस्टर भी मिला जिसमें कार्ड धारकों के साथ दवाइयों के लेन-देन का संदिग्ध हिसाब-किताब दर्ज था। हनुमान नगर पुलिस ने पीएमओ डॉ. राजकुमार गुप्ता की रिपोर्ट पर सहकारी उपभोक्ता प्रबंधक टोंक, फार्मासिस्ट आयुष नागर, भरत नागर, विनोद शर्मा और साहिल अंसारी के खिलाफ विभिन्न गंभीर धाराओं में मामला दर्ज किया है। पुलिस ने 21 पेज की निरीक्षण रिपोर्ट के आधार पर जांच शुरू कर दी है। मामले का अनुसंधान स्वयं थानाधिकारी गणेश द्वारा किया जा रहा है।

शाहपुरा में परशुराम प्रीमियर लीग क्रिकेट प्रतियोगिता का समापन, कश्यप टीम ने जीता परशुराम प्रीमियर लीग-3 का खिताब

▪ स्मार्ट हलचल

शाहपुरा-परशुराम सेवा समिति शाहपुरा के तत्वावधान में आयोजित परशुराम प्रीमियर लीग क्रिकेट प्रतियोगिता (सीजन-3) का भव्य समापन समारोह संपन्न हुआ। पुरस्कार वितरण समारोह की अध्यक्षता गौतम संस्थान शाहपुरा के अध्यक्ष द्वारका प्रसाद शर्मा ने की।

समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में सहस्त्र ओदिच्य समाज अध्यक्ष दिनेश शुक्ला, गौतम संस्थान के पूर्व अध्यक्ष एवं अभिभाषक संस्था के पूर्व अध्यक्ष अनिल शर्मा, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के अधीक्षण अभियंता मयंक शर्मा तथा विप्र फाउंडेशन भीलवाड़ा के पूर्व युवा अध्यक्ष शरद शुक्ला उपस्थित रहे। समारोह को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि द्वारका प्रसाद शर्मा ने कहा कि खेल को खेल भावना के साथ खेलना चाहिए, जिससे खिलाड़ियों में अनुशासन, प्रतिभा एवं खेल भावना का विकास होता है। विशिष्ट अतिथि दिनेश शुक्ला ने कहा कि ऐसे आयोजनों से समाज की खेल प्रतिभाओं को आगे बढ़ने का अवसर मिलता है और समय-समय पर ऐसे आयोजन होते रहने चाहिए।अधिवक्ता अनिल शर्मा ने सफल आयोजन के लिए सभी खिलाड़ियों एवं आयोजकों को बधाई दी। प्रतियोगिता का फाइनल मुकाबला रविवार को खेला गया, जिसमें पहले बल्लेबाजी करते हुए टीम कश्यप ने 68 रनों का लक्ष्य टीम महर्षि गौतम के समक्ष रखा। जवाब में टीम गौतम 65 रन ही बना सकी और रोमांचक मुकाबले में टीम कश्यप ने 2 रनों से जीत दर्ज कर खिताब अपने नाम किया। फाइनल मैच के मैन ऑफ द मैच सोनू पारीक (बिशनिया) रहे, जिन्होंने 38 रन की महत्वपूर्ण पारी खेली तथा गेंदबाजी में 2 विकेट लिए। प्रतियोगिता के सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज अरिंजय शर्मा (भीलवाड़ा), सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज राधे शर्मा तथा मैन ऑफ द सीरीज राधे शर्मा (अवधेश शर्मा) रहे। विजेता टीम कश्यप को 15,000 नगद राशि एवं ट्रॉफी तथा उपविजेता टीम को 11,000 नगद राशि एवं ट्रॉफी प्रदान कर सम्मानित किया गया। सभी अतिथियों एवं खिलाड़ियों ने सफल आयोजन के लिए परशुराम सेवा समिति का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में विपिन गौड़, मोहन चौबे, प्रभात शर्मा, अंकित भट्ट, महेश पाराशर सहित बड़ी संख्या में खिलाड़ी एवं खेलप्रेमी उपस्थित रहे।

अधिवक्ताओ का स्नेह मिलन आयोजित

▪ स्मार्ट हलचल

भीलवाड़ा । जिला अभिभाषक संस्था भीलवाड़ा के अधिवक्ता अनिल कुमार पारीक के नेतृत्व मे सिंदरी के बालाजी मे नव वर्ष 2026 की वेला पर अधिवक्ताओ के स्नेह मिलन का आयोजन किया। जिसमे अधिवक्ताओ ने सामूहिक रूप से राजस्थानी भोजन तैयार कर भोजन का आनंद लिया। इसी दौरान प्रतियोगिताये भी आयोजित की गई जिसमे अधिवक्ता बालू लाल उपाध्याय व सरिता स्वर्णकार विजयी रहे उन्हें अखिल भारतीय अधिवक्ता परिषद भीलवाड़ा के सचिव पीरू सिंह गौड़ ने परितोषिक वितरित किये गये साथ ही कानूनी बिन्दुओ पर विचार विमर्श किया गया। अधिवक्ताओ ने न्यायालय मे पैरवी के दौरान रहे अपने अनुभवो को साझा किया। इस दौरान शीबा जॉन, पल्लवी काबरा, दीपक चतुर्वेदी, पुखराज, राहुल पोरवाल, आरती कुमावत, अनिल सोनी, विकास टेलर, कन्हैया लाल तेली सहित कई अधिवक्ता साथीयो ने सहयोग किया ।

राम मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा की दूसरी वर्षगांठ पर पांच दिवसीय कार्यक्रमों का भव्य आयोजन

मंशापूर्ण बालाजी को लगाया 201 किलो गाजर के हलवे का भोग, 75 घंटे चली रामधुन

▪ स्मार्ट हलचल

पोटलां । उपतहसील मुख्यालय पर राम मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा की दूसरी वर्षगांठ के मौके पर पांच दिवसीय कार्यक्रमों का भव्य आयोजन हुआ। आयोजन से जुड़े कार्यकर्ताओं ने बताया कि नगर में राम मंदिर पर हुई राम जी की प्राण प्रतिष्ठा की दूसरी वर्षगांठ पर अनेक आयोजन आयोजित हुए।

पंचांग के अनुसार 31 दिसंबर को तिथि पर आयोजन आयोजित हुए जिसमें 31 दिसंबर से 3 जनवरी तक 75 घंटे की अखंड राम धुन का आयोजन हुआ उससे एक दिन पूर्व आयोजनों का आगाज हुआ जिसमें गढवाले बालाजी मंदिर, चामुंडा माता मंदिर, गणेश जी मंदिर रावला चौक, चारभुजा नाथ मंदिर शिव परिवार मंदिर, सहित अनेक मंदिरों में विशेष श्रृंगार चोला बागा, पूजा, हवन, भजन, रामचरितमानस पाठ, सुंदरकांड पाठ, हनुमान चालीसा पाठ और ध्वजारोहण जैसे कार्यक्रम हुए, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया उसके बाद पंचवटी धाम पर मंशापूर्ण बालाजी मंदिर पर पर अखंड राम धुन का 31 दिसंबर से आगाज हुआ जिसमें रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीताराम... कौशल्या के प्यारे, राम दशरथ नंदन प्यारे राम... जैसे अनेक रामजी के स्नेहिल स्पर्शी शब्दों से राम धुन का आयोजन हुआ जिससे आस्था, संस्कृति और उत्सव का माहौल बना रहा एवं वातावरण राममय हो गया. राम धुन की पूर्णाहुति शनिवार को संध्या आरती पर हुई संध्या आरती के दौरान मंशापूर्ण बालाजी मंदिर पर को विशेष डेकोरेशन कर रोशनी से सजाया गया एवं दीप जलाकर आकर्षक सजावट की गई, मंशापूर्ण बालाजी को संध्या आरती पश्चात 201 किलो गाजर के हलुआ एवं बुंदी, रोट गुड़, मावा, गुड़ चना, संतरा, केला सहित अनेक वस्तुओं का भोग लगाया गया भोग लगाकर श्रद्धालुओं को प्रसाद वितरित किया, इस दौरान दर्शन के लिए श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ी, और श्रद्धालुओं ने बड़े उत्साह से भाग लिया. उसके बाद भजन संध्या का आयोजन हुआ जो भोर तक चला जिसमें भजन गायकों कलाकारों द्वारा अनेक रंगारंग प्रस्तुतियां दी जिसमें छम छम नाचे मेरे वीर हनुमाना... दुनिया में देव हजारों है मेरे बजरंगबली का क्या कहना... लाल लंगोटा हाथ में गोटा तरी जय हो पवन कुमार... सहित अनेक भजनों से भगवान को रिझाया जो भक्तों को नाचने पर विवश कर दिया भजन संध्या भोर का दौर तक चला अल सुबह 5 दिवसीय कार्यक्रमों की पूर्णाहुति हुई इस दौरान भक्तों ने बताया कि यह सिर्फ एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि आस्था, संस्कृति और भारतीय परंपराओं का एक भव्य उत्सव बन गया ।

निरंकारी मिशन शिविर में 52 यूनिट रक्तदाताओं ने रक्तदान किया

▪ स्मार्ट हलचल

गंगापुर - संत निरंकारी चैरिटेबल फाउंडेशन ब्रांच महेंद्रगढ़ द्वारा विशाल रक्तदान शिविर नगर पालिका गंगापुर अंबेडकर भवन पर आयोजन हुआ । शिविर का शुभारंभ गंगापुर थाना अधिकारी लीलाधर मालवीय द्वारा किया गया । निरंकारी मिशन के संयोजक मांगीलाल ने बताया कि शिविर 52 यूनिट रक्तदाताओं ने रक्तदान किया । मिशन के ज्ञान प्रचारक महात्मा राजेंद्र प्रसाद ने बताया कि रक्त नालियों में नहीं नाड़ियों में बहे रक्तदान के महत्व के बारे में अवगत कराया तथा मिशन द्वारा किए जा रहे सेवा कार्यों के बारे में बताया । रक्तदान शिविर में पूर्व विधायक गायत्री देवी त्रिवेदी, भाजपा प्रत्याशी रूपलाल जाट, जगपाल सिंह, मोहन शा. गंगापुर चिकित्सा अधिकारी प्रभारी शरद नलवाया, ग्यारसी लाल उपस्थित रहे । शिविर को सफल बनाने में मिशन के अरविंद शर्मा, भेरूलाल राव, बद्रीलाल प्रजापत, शिवकुमार शर्मा, राहुल, चांद दलीचंद लादू लाल की महत्वपूर्ण भूमिका रही । रक्तदान शिविर के साथ सत्संग का आयोजन भी हुआ ।

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना में 4.28 करोड़ लागत की सड़के स्वीकृत

▪ स्मार्ट हलचल

भीलवाड़ा । प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के चौथे चरण में राजस्थान में 2089.27 करोड़ की 1216 सड़कें स्वीकृत की गई है इसी के तहत भीलवाडा में सांसद दामोदर अग्रवाल के प्रयासों से 4.28करोड रुपए की अनुमानित लागत की 4 सड़के जिनकी लम्बाई 5.6 किलोमीटर स्वीकृति हुई है । सांसद प्रवक्ता विनोद झुरानी ने बताया कि भीलवाड़ा सांसद दामोदर अग्रवाल के प्रयासों से केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने भीलवाड़ा जिले में 4 .28करोड रुपए की 5.6 किलोमीटर सड़को की स्वीकृति प्रदान की है। सांसद अग्रवाल ने बताया कि यह

सड़के न केवल ग्रामीण क्षेत्रों में बल्कि राज्य के सामाजिक आर्थिक विकास को गति देने में सहायक सिद्ध होंगी। भीलवाड़ा जिले के आसींद जेतपुरा में 1.5 km कोटरी तहसील के माता जी का खेड़ा में 1.5 km कोटड़ी के जावल से नोहरा गुजरो का में .700 km व कोटड़ी के इंडोकड़िया का झोपडा में 1.9 km स्वीकृति मिली है ।

शाहपुरा में रोशनी की उम्मीद बना 21वां निःशुल्क नेत्र शिविर

▪ स्मार्ट हलचल

शाहपुरा / मानव सेवा की एक और मिसाल रविवार को उस समय देखने को मिली, जब सद्भावना सेवा ट्रस्ट के तत्वावधान में एवं स्माइल फाउंडेशन के सहयोग से आयोजित 21वें निःशुल्क नेत्र चिकित्सा एवं लेंस प्रत्यारोपण शिविर का भव्य शुभारंभ हुआ। शिविर का उद्घाटन शाहपुरा विधायक डॉ. लालाराम बैरवा ने झंडारोहण कर किया। इस अवसर पर वातावरण सेवा, संवेदना और उम्मीद से सराबोर नजर आया।

उद्घाटन के पश्चात विधायक डॉ. बैरवा ने शिविर में ऑपरेशन हेतु भर्ती किए गए रोगियों से आत्मीय संवाद किया, उनकी समस्याएं सुनीं और बेहतर उपचार की व्यवस्थाओं की जानकारी ली। मरीजों के चेहरों पर लौटती उम्मीद और आंखों में चमक देखकर विधायक भावुक भी हुए। उन्होंने कहा कि समाज सेवा के क्षेत्र में इस तरह के शिविर वास्तव में "अंधेरे में रोशनी" बनकर उभरते हैं। डॉ. बैरवा ने अब तक आयोजित किए गए शिविरों की जानकारी लेते हुए कहा कि चिकित्सा के क्षेत्र में राज्य सरकार की ओर से हर संभव सहायता दी जा रही है, ताकि जरूरतमंदों तक योजनाओं का लाभ पहुंचे। उन्होंने शाहपुरा जैसे क्षेत्र में निःशुल्क नेत्र चिकित्सा एवं लेंस प्रत्यारोपण शिविर को अत्यंत लाभदायी बताते हुए विश्वास जताया कि ग्रामीणों व शहरवासियों का इस पुण्य कार्य में निरंतर सहयोग मिलता रहेगा। इस अवसर पर नगर पालिका अध्यक्ष रघुनंदन सोनी, स्थानीय भाजपा पदाधिकारी, सामाजिक कार्यकर्ता एवं बड़ी संख्या में नागरिक उपस्थित रहे। स्माइल फाउंडेशन के प्रतिनिधि अनिल लोढ़ा ने अतिथियों का स्वागत करते हुए शिविर की व्यवस्थाओं पर प्रकाश डाला। वहीं सद्भावना सेवा ट्रस्ट की अध्यक्ष कमला चैधरी ने आभार व्यक्त करते हुए बताया कि ट्रस्ट वर्षों से निःस्वार्थ भाव से सेवा कार्यों में जुटा है और यह शिविर उसी सेवा यात्रा की एक कड़ी है। आयोजन समिति की ओर से अतिथियों का सम्मान भी किया गया। शिविर की सफलता के लिए भ्रमणशील नेत्र चिकित्सालय, जिला अंधता निवारण समिति, भीलवाड़ा, आर.एन.टी. मेडिकल कॉलेज उदयपुर, एस.एम.एस. चिकित्सालय जयपुर एवं रामनिवासधाम ट्रस्ट के सहयोग के प्रति शिविर प्रभारी अनिल लोढ़ा ने विशेष आभार जताया। निःशुल्क नेत्र शिविर न केवल मरीजों को नई दृष्टि दे रहा है, बल्कि समाज में सेवा, करुणा और सहयोग की भावना को भी मजबूती प्रदान कर रहा है। यही इस आयोजन की सबसे बड़ी सफलता है।

लादूवास समिति के प्रशासक ने लाखो का भुगतान किया

▪ स्मार्ट हलचल

करेड़ा -उप खंड क्षेत्र के लादूवास ग्राम सेवा सेहकारी समिति के व्यवस्थापक नारायण लाल गुर्जर ने ज्वाइन करने के बाद ग्रामीणों के अटके हुए लाखो के भुगतान किये जानकारी अनुसार ग्राम सेवा सहकारी समिति लादूवास मे हाल ही मे बोर्ड भंग हुआ था जिस पर प्रशासन नियुक्त किया गया पिछले काफ़ी समय से समिति के खाता धारको के रुपये खातों मे अटके हुए थे किसी कारण बोर्ड द्वारा रूपये वितरण नहीं हुए जिस पर प्रशासक नियुक्ति के बाद व्यवस्थापक नारायण गुर्जर ने खाता धारकों को लाखों रुपए का भुगतान किया जिससे

ग्रामीणों में खुशी की लहर है

टीन शेड गायब, कटीली झाड़ियों और बदबू के बीच होता है अंतिम संस्कार

जहां मौत के बाद भी सुकून नहीं: आंमा गांव का श्मशान घाट बदहाल, गंदगी और कीचड़ के बीच अंतिम विदाई देने को मजबूर

▪ स्मार्ट हलचल

मांडलगढ़ । विकास के दावों के बीच मांडलगढ़ विधानसभा क्षेत्र की ग्राम पंचायत आंमा से मानवता को शर्मसार करने वाली तस्वीर सामने आई है। यहां का श्मशान घाट अपनी बदहाली पर आंसू बहा रहा है। हालात इतने खराब हैं कि अंतिम विदाई देने आए परिजनों को अपार दुख के बीच नारकीय स्थितियों से गुजरना पड़ता है। रविवार को गांव के गणेश लाल जरवाल के निधन पर जब ग्रामीण अंतिम संस्कार के लिए पहुंचे, तो वहां फैली गंदगी और अव्यवस्थाओं को देखकर उनका गुस्सा फूट पड़ा। बारिश में तिरपाल का सहाराः श्मशान घाट की सबसे बड़ी विडंबना यह है कि यहां के टीन शेड गायब हो चुके हैं।

ग्रामीणों ने बताया कि बारिश के दिनों में शव का दाह संस्कार करना किसी बड़ी चुनौती से कम नहीं होता। लोगों को भीगते हुए तिरपाल की ओट में अंतिम क्रिया संपन्न करनी पड़ती है।

रास्ते में कीचड़ और झाड़ियों का बसेराः

श्मशान घाट तक जाने वाला मार्ग कीचड़ से अटा पड़ा है। तालाब की पाल पर जमा गंदगी और वहां से उठती असहनीय दुर्गंध के कारण वहां बैठना भी दूभर है। ग्रामीण कटीली झाड़ियों और कचरे के ढेर के बीच बैठने को मजबूर हैं। छाया और पानी जैसी मूलभूत सुविधाओं का यहां नामोनिशान नहीं है।

विधायक ने दिया आश्वासनः

'ग्रामीण एडवोकेट बालकृष्ण पुरोहित, सुखदेव जरवाल और राधेश्याम तेली सहित अन्य प्रबुद्ध नागरिकों ने बताया कि सरपंच गोपाल सुवालका को कई बार अवगत कराया गया, लेकिन स्थिति जस की तस है। हालांकि, मांडलगढ़ विधायक गोपाल खंडेलवाल ने मामले को संज्ञान में लेते हुए शीघ्र व्यवस्थाएं सुधारने और विकास कार्य कराने का भरोसा दिलाया है।

श्री गणेश उत्सव प्रबंध एवं सेवा समिति द्वारा निःशुल्क जोड़ प्रत्यारोपण रोग शिविर आयोजित

निःशुल्क चिकित्सा शिविर का लाभ पाने वाले रोगियों का निरन्तर लेते फॉलोअप

▪ स्मार्ट हलचल

भीलवाड़ा . श्री गणेश उत्सव प्रबंध एवं सेवा समिति भीलवाड़ा के तत्वावधान में आज रविवार को आर सी व्यास कॉलोनी स्थितअपनाघर वृद्धाश्रम परिसर में निःशुल्क जोड़ प्रत्यारोपण रोग शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में अहमदाबाद के प्रसिद्ध जॉइन्ट रिपलेस्मेन्ट विशेषज्ञ डॉ. दीपक दवे (एमएस आर्थो.) एवं डॉ. रौनक देसाई (एमएस आर्थो.) ने सेवाएं प्रदान की। सुबह 10.30 से दोपहर 2 बजे तक चले शिविर में भीलवाड़ा एवं आसपास के क्षेत्रों से कई रोगी परामर्श प्राप्त करने के लिए पहुंचे। शिविर का शुभारंभ भगवान गणपति के समक्ष अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन से किया गया। शुभारंभ समारोह में अतिथियों का स्वागत श्री गणेश उत्सव समिति के अध्यक्ष उदयलाल समदानी ने किया।

समिति के मीडिया प्रभारी महावीर समदानी ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए बताया कि समिति द्वारा एलोपैथी चिकित्सा के 710 शिविर आयोजित किए जा चुके है एवं चिकित्सा की 6 भिन्न भिन्न पैथियों के पांच हजार से अधिक शिविर समिति द्वारा लगाए जा चुके है। इन शिविरों के माध्यम से विभिन्न बीमारियों से पीड़ित लाखों जरूरतमंद रोगियों को राहत मिली है। उन्होंने कहा कि समिति निःशुल्क शिविर में आने वाले रोगियों का शिविर के बाद भी फॉलोअप करके उनकी समस्याओं से राहत दिलाने का प्रयास करती है। शिविर में विभिन्न जोड़ एवं पैरों में झनझनाहट, कुल्हा ,कंधा,कमर एवं घुटनों संबंधी बीमारियों के रोगियों को परामर्श दिया समारोह में समिति के कार्य एवं सेवाओं में सहयोग प्रदान करने वाले समाजसेवियों बनवारी लाल मुरारका,नारायण लड्ढा, ओपी हिंगड़, अक्षय कोठारी, जयकिशन मित्तल, गणपत जागेटिया, अरूण जागेटिया, राजेन्द्र कचोलिया, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, देवेन्द्र सोमानी, रामनारायण सोमानी, सत्येन्द्र तोतला, प्रकाश पोरवाल, निलेश कांठेड़ आदि का शॉल ओढ़ाकर सम्मान किया गया। शिविर सफल बनाने में हॉस्पिटल प्रबंधक अनिल शर्मा का विशेष सहयोग रहा। शिविर का लाभ प्राप्त करने वाले रोगियों एवं उनके परिजनों ने निरन्तर सेवा कार्य करने वाली श्री गणेश उत्सव प्रबंध एवं सेवा समिति के प्रति साधुवाद अर्पित किया।

न चढ़ता है पैसा, न चढ़ता है दान - ऐसा हैं श्रीबाबाधाम

श्री बाबाधाम पर रक्तदान में उमड़ी भीड़, 271 यूनिट रक्त संग्रहित

▪ स्मार्ट हलचल

भीलवाड़ा। श्री बाबाधाम के रक्तदान केम्प का विधिवत् उद्घाटन भगवान के जयकारों के साथ हुआ। श्री बाबाधाम के अध्यक्ष श्री विनीत अग्रवाल ने पहले ही एक मिटींग के द्वारा सभी सेवादारों को रक्तदान केम्प के लिये अपनी-अपनी सेवा प्रदान की थी। आज सुबह से ही सभी सेवादारों ने श्री महात्मा गांधी अस्पताल के डॉक्टर व स्टाफ के साथ मिलकर अंतिम तैयारी की। रक्तदान के लिये भक्तों का आना सुबह से ही शुरू हो गया। रक्तदान करने वालों की भीड़ को देखते हुए बेड ज्यादा लगाये गये। श्री बाबाधाम के मीडिया प्रभारी राजेश नैनावटी ने बताया कि पिछले कई वर्षों से इसी माह में ''रक्तदान शिविर'' का आयोजन किया जाता है। रक्तदान करने वालों में

श्री बाबाधाम के सेवादारों के परिवारों के अलावा कई भक्तों ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। श्री बाबाधाम में आयोजित रक्तदान शिविर में रक्तवीर स्वयं विनीत अग्रवाल ने 23वीं बार, श्रीमती कृष्णा अग्रवाल ने भी रक्तदान किया। इसी क्रम में रामचन्द्र मुन्दड़ा ने 70वीं बार, प्रमोद कुमार तोषनीवाल ने 49वीं बार, ओमप्रकाश काबरा ने 36वीं बार, स्वरम त्रिपाठी ने 13वीं बार, राहुल साहू ने 9वीं बार रक्तदान किया, जिसके परिणामस्वरूप 271 यूनिट रक्त संग्रहित हुआ। ये सारा रक्तदान यूनिट एक्सीडेंटल केस व गरीब बेसहारा लोगों के लिये काम में लिया जायेगा। रक्तदान करने वालों में कई भक्तजन जो नियमित रविवार को दर्शन के लिये आते हैं उन्होंने भी स्वेच्छा से रक्तदान किया। भक्तजनों में रक्तदान देने के लिये होड़ सी बन गयी। इस मौके पर नववर्ष के कलेण्डर का भी विमोचन किया गया। रक्तदान शिविर एवं कलेण्डर विमोचन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि महंत बनवारी शरण कांठिया बाबा, महंत योगगुरू कल्किराम, पूर्व सभापति ओमप्रकाश नराणीवाल सहित कई समाजसेवी एवं राजनेता उपस्थित थे। सभी भक्तों व सेवादारों ने अगले वर्ष और ज्यादा से ज्यादा रक्तदान करने की प्रेरणा ली। सभी भक्तों ने विशेष महाआरती के दर्शन कर धर्म का लाभ लिया। आरती में कलेण्डर बांटे गये, पूरे देश में कलेण्डर भेजे गये, भक्तजन में उत्साह देखने को मिला।

गेणोली के जंगलों में वन माफिया का तांडवः

खुलेआम कट रहे खेर के पेड़, वन विभाग की लापरवाही से प्रकृति को लग रहा चूना

▪ स्मार्ट हलचल

सतबड़ी बालाजी के पास अवैध कटाई जारी, ग्रामीणों ने लगाया कर्मचारियों पर मिलीभगत का आरोप

*** लाखों की वन संपदा नष्ट, प्रशासन से सख्त कार्रवाई की मांग**

मांडलगढ़ । मांडलगढ़ क्षेत्र की गेणोली ग्राम पंचायत में इन दिनों वन माफिया सक्रिय हैं। सतबड़ी बालाजी के समीप स्थित जंगलों में कीमती खेर के पेड़ों की अंधाधुंध अवैध कटाई की जा रही है। ग्रामीणों का सीधा आरोप है कि वन विभाग के स्थानीय कर्मचारियों की शिथिलता और लापरवाही के चलते यह अवैध कारोबार दिन-रात फल-फूल रहा है। कीमती लकड़ी की तस्करीः ग्रामीणों ने बताया कि जंगल क्षेत्र से प्रतिदिन खेर के पेड़ों को काटकर ले जाया जा रहा है। अब तक लाखों रुपए मूल्य की वन संपदा नष्ट हो चुकी है। खेर की लकड़ी का उपयोग कत्था बनाने और अन्य व्यापारिक कार्यों में होता है, जिसके चलते माफिया की नजर इन जंगलों पर टिकी है। पर्यावरण पर मंडराया संकटः स्थानीय लोगों का कहना है कि लगातार हो रही कटाई से न केवल राजस्व की हानि हो रही है, बल्कि क्षेत्र का पर्यावरणीय संतुलन भी बिगड़ रहा है। यदि विभाग ने जल्द ही कोई ठोस कदम नहीं उठाए, तो आने वाले समय में ये जंगल पूरी तरह समाप्त हो जाएंगे। कठोर कार्रवाई की मांगः गेणोली के ग्रामीणों ने जिला प्रशासन और वन विभाग के उच्चाधिकारियों से मांग की है कि इस मामले की निष्पक्ष जांच कराई जाए और जो भी कर्मचारी या तस्कर इसमें लिप्त हैं, उनके खिलाफ कठोर कानूनी कार्रवाई की जाए।

उमड़े रक्तदाता, 400 यूनिट रक्तदान हुआ संग्रहित, ब्लड प्रेशर, शुगर सहित जरूरी चिकित्सकीय जांच हुई

▪ स्मार्ट हलचल

भीलवाड़ा। श्रीराम मण्डल सेवा संस्थान द्वारा शास्त्रीनगर नीलकंठ महादेव मंदिर के पास खाण्डल विप्र विकास ट्रस्ट छात्रावास में विशाल रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। सुबह 8 से शाम 6 बजे तक आयोजित शिविर में 400 यूनिट रक्तदान किया गया। शिविर का शुभारंभ एवं दीप प्रज्वलन पूर्व नगर परिषद के पूर्व सभापति ओम नराणीवाल, उद्योगपति राधाकिशन सोमानी, भीलवाड़ा मजदूर संघ के अध्यक्ष पन्नालाल चौधरी, समाजसेवी कैलाश तापड़िया, अनिल राठी, पार्षद आशा शर्मा, पूर्व पार्षद कैलाश शर्मा आदि ने किया। अतिथियों का स्वागत श्रीराम मण्डल सेवा संस्थान के अध्यक्ष शांतिप्रकाश मोहता ने किया।

शिविर प्रभारी ममता शर्मा ने बताया कि रक्तदाताओं की हौंसला अफजाई करने के लिए जनप्रतिनिधियों, उद्यमियों के साथ समाज के विभिन्न वर्गों के प्रतिष्ठितजन पहुंचे। उन्होंने रक्तदाताओं का संबल बढ़ाने के साथ मानव सेवा के लिए उनके जज्बे की सराहना की। शिविर में कई युवा ऐसे भी थे जिन्होंने जीवन में पहली बार रक्तदान किया

था। पूर्व पार्षद कैलाश शर्मा ने पत्नी पार्षद आशा शर्मा के साथ सजोड़ा रक्तदान किया। कोई मित्र संग तो कोई भाई के साथ रक्तदान के लिए पहुंचा। शिविर 51वीं बार रक्तदान करने वाले परमेश्वर बाहेती जैसे रक्तवीर थी भी थे जो सबके लिए प्रेरणास्रोत का कार्य कर रहे थे। कई रक्तदाता ऐसे थे जो लंबे समय से हर तीन-चार माह में एक बार रक्तदान अवश्य करते है। रक्तदान करने की भावना रखने वालों की पहले ब्लड प्रेशर, शुगर सहित सभी जरूरी चिकित्सकीय जांच भी की गई। तेज सर्द हवाओं की परवाह किए बिना रक्तदान के लिए इस कदर उत्साह दिखाया कि दो दर्जन से अधिक बैड लगाने के बावजूद खून देने के लिए बारी आने का इंतजार करना पड़ रहा था। रक्तदाताओं के लिए 25 बैड लगाए गए थे। रक्त संग्रहण का कार्य महात्मा गांधी चिकित्सालय ब्लड बैंक, रामस्नेही चिकित्सालय ब्लड बैंक एवं भीलवाड़ा ब्लड बैंक की टीमों ने किया। शिविर सफल बनाने में श्रीराम मण्डल सेवा संस्थान के सदस्य मुकेश वर्मा, संजय पारीक, चौनसिंह चौहान, रामावतार शर्मा, संजय तोषनीवाल, किशन जाट, मंगलचंद मिश्रा, राधेश्याम खेतान, बनवारी माली, राजपाल ढाका, जितेन्द्र सेन, दिनेश लखोटिया, हनुमान परिहार, लक्की सैनी, बाबूलाल तिवाड़ी, जयेश पारीक, सुभाष शर्मा आदि ने सक्रिय सहयोग प्रदान किया। रक्तदान करने के लिए युवाओं से लेकर हर उम्र वर्ग के लोगों में उत्साह का माहौल था। कई युवा ऐसे थे जिन्होंने जीवन में पहली बार रक्तदान किया था।

उनके शरीर का रक्त किसी की जिंदगी बचाने में कार्य आएगा ये सोच उत्साहित दिखे ओर जरूरत पड़ने पर भविष्य में भी रक्तदान की भावना जताते दिखे। पहली बार रक्तदान करने वाले मानव सेवा के इस मिशन में सहभागी बन प्रसन्न नजर आए। रक्तदाताओं की सुविधा के लिए सभी जरूरी प्रबंध शिविर स्थल भी किए गए थे। सुबह 8 बजे रक्तदान के लिए एक बार जो कतार लगना शुरू हुई तो वह शाम 6 बजे शिविर समाप्त होने तक भी चलती रही।

स्वत्वाधिकार प्रकाशन एवं मुद्रक राजकुमार आमेटा के लिए स्मार्ट कम्प्यूटर्स एण्ड प्रिन्टर्स, कोर्ट के सामने, माण्डलगढ़ से प्रकाशित एवं मुद्रित। सह. सम्पादक मो. 9649222850 Email.smarthalchalnews@gmail.com

पैदल चलते यात्रियों पर पलटा बेकाबू ट्रक, 3 की दर्दनाक मौत

प्रशासन ने पिछले हादसों से नहीं लिया सबक, मेगा हाइवे पर जारी भारी वाहनों का आवागमन

▪ स्मार्ट हलचल

लोगों में भारी आक्रोश, स्थाई समाधान की मांग

लाखेरी – लाखेरी उपखंड क्षेत्र के लबान और पापड़ी ओवरब्रिज के बीच चौथ माता के दर्शन के लिए निकले श्रद्धालुओं की पदयात्रा रविवार को उस समय मातम में बदल गई, जब देईखेड़ा क्षेत्र में कोटा–दौसा लालसोट मेगा हाईवे पर एक भीषण सड़क हादसे ने आस्था को कुचल दिया। लबान और पापड़ी रेलवे ओवरब्रिज के बीच रूई से भरा एक तेज़ रफ्तार ट्रक अचानक बेकाबू होकर पैदल जा रहे श्रद्धालुओं के जत्थे पर पलट गया। इस हृदयविदारक हादसे में तीन श्रद्धालुओं की मौके पर व इलाज के दौरान मौत हो गई, जबकि आधा दर्जन से अधिक श्रद्धालु गंभीर रूप से घायल हो गए। हादसे की भयावहता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि कई श्रद्धालु ट्रक के नीचे दब गए और चारों ओर चीख-पुकार मच गई। कुछ ही पलों में खुशी और भक्ति का माहौल चीखों और आंसुओं में बदल गया।

तेज रफ्तार बनी मौत की वजह

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार ट्रक अत्यधिक तेज़ गति में था। अचानक चालक का संतुलन बिगड़ा और ट्रक सड़क किनारे पैदल चल रहे श्रद्धालुओं पर पलट गया। हादसा इतना भीषण था कि सड़क पर दूर-दूर तक सामान और जूते-चप्पल बिखर गए।

रेस्क्यू में जुटा प्रशासन, जिला स्तर के अधिकारी मौके पर पहुंचे

सूचना मिलते ही लाखेरी पुलिस, देईखेड़ा थाना पुलिस, प्रशासनिक अधिकारी, 108 एंबुलेंस और राहत-बचाव दल मौके पर पहुंचे। कड़ी मशक्कत के बाद ट्रक के नीचे दबे श्रद्धालुओं को बाहर निकाला गया और घायलों को तुरंत देईखेड़ा अस्पताल पहुंचाया गया।

इलाज के दौरान बढ़ा मौतों का आंकड़ा

देईखेड़ा अस्पताल में उपचार के दौरान राजाराम (50) निवासी अमरपुरा और कालूलाल निवासी करीरिया, सांगोद (कोटा) को चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया।

गंभीर घायलों को कोटा रेफर किया गया, जहां इलाज के दौरान सांवरा केवट (22) निवासी गुहाटा ने दम तोड़ दिया। अन्य कई घायलों की हालत अब भी चिंताजनक बताई जा रही है।

गंभीर घायल (कोटा अस्पताल में भर्ती) लक्ष्मी (17) निवासी गुहाटा
देवीलाल (40) निवासी अमरपुरा,
गिरिराज (35),
रामकिशन (50), महावीर (35),
प्राथमिक उपचार के बाद छुट्टी,
जोधराज (38) निवासी अमरपुरा,
गिरिराज (20)
महावीर, निवासी अमरपुरा
फोरूलाल, निवासी ईसरदा के श्रृद्धालु थे।

आक्रोश फूटा, ट्रक को किया आग के हवाले

हादसे के बाद श्रद्धालुओं और ग्रामीणों का गुस्सा फूट पड़ा। आक्रोशित भीड़ ने दुर्घटनाग्रस्त ट्रक में आग लगा दी और मेगा हाईवे को जाम कर धरने पर बैठ गई। देखते ही देखते हालात तनावपूर्ण हो गए। स्थिति को नियंत्रित करने के लिए अतिरिक्त पुलिस बल तैनात किया गया। मौके पर बूंदी एडीशनल एसपी उषा शर्मा, एडीएम बूंदी आर. किशोर, लाखेरी सीआई सुरेंद्र चौधरी, नायब तहसीलदार जगदीश शर्मा, रामभरोस मीणा और केशोरायपाटन एसडीएम पहुंचे और लोगों से समझाइश कर हालात संभालने का प्रयास किया।

मुआवजे और भारी वाहनों पर रोक की मांग

खबर लिखे जाने तक श्रद्धालु और ग्रामीण मृतकों व घायलों को उचित मुआवज़ा, परिजनों को सरकारी सहायता, और मेगा हाईवे पर भारी वाहनों की आवाजाही स्थाई रूप से बंद करने की मांग को लेकर सड़क पर डटे हुए थे। हाईवे पर लंबा जाम लग गया। हादसे के चलते कोटा–दौसा–लालसोट मेगा हाईवे पर दोनों ओर कई किलोमीटर लंबा जाम लग गया। यात्रियों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा। पुलिस ने यातायात को वैकल्पिक मार्गों से डायवर्ट किया।

पिछले हादसों से मूकदर्शक प्रशासन

जिला प्रशासन ने मेगा हाइवे पर हुए पिछले हादसों से सबक नहीं लिया। एक्सप्रेस वे के भारी वाहनों का आवागमन अभी भी चालू है, जिसके कारण हादसे हो रहे हैं।

श्री गंगेश्वर महादेव में संगीतमय राम कथा का दुसरा दिन

▪ स्मार्ट हलचल

छोटी सादड़ी उपखंड मुख्यालय के मुख्यालय के बंबोरी – रघुनाथपुरा स्थित प्राचीन एवं आस्था के प्रमुख केंद्र श्री .गंगेश्वर महादेव मंदिर परिसर में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी संगीतमय श्री राम कथा का आयोजन श्रद्धा एवं भक्ति भाव के साथ किया जा रहा है। राम कथा के आयोजन से क्षेत्र में धार्मिक वातावरण व्याप्त हो गया है। कथा के दूसरे दिन प्रसिद्ध कथावाचक पंडित श्री मानक चन्द्र मेनारिया के पावन मुखारविंद से मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के जीवन चरित्र पर आधारित दिव्य प्रसंगों का भावपूर्ण वर्णन किया गया। उन्होंने श्रीराम के आदर्श जीवन, सत्य, मर्यादा, सेवा और भक्ति के संदेशों को सरल व भावनात्मक शैली में प्रस्तुत किया, जिसे सुनकर श्रद्धालु भावविभोर हो उठे। राम कथा श्रवण हेतु बंबोरी, रघुनाथपुरा सहित आसपास के अनेक ग्रामों से सैकड़ों श्रद्धालु पुरुष एवं महिलाएं उपस्थित रहे। कथा के दौरान श्रद्धालुओं द्वारा 'राम सिया राम' के जयघोष से समूचा मंदिर परिसर गुंजायमान हो उठा। आयोजन समिति के किशन जणवा ने बताया कि प्रतिदिन राम कथा का समय प्रातः 11:30 बजे से अपराह्न 3:30 बजे तक रहेगा। कथा समाप्ति के पश्चात विधिवत महाआरती का आयोजन किया गया, जिसके बाद सभी श्रद्धालुओं को प्रसाद का वितरण किया गया। राम कथा के आयोजन से क्षेत्र में धर्म, भक्ति और संस्कारों का संदेश प्रसारित हो रहा है।

अवैध खनन विरोधी अभियान का चित्तौड़गढ़ में असर नहीं: पूर्व मंत्री जाड़ावत

▪ स्मार्ट हलचल

शंभूपुरा । राजस्थान सरकार के पूर्व राज्यमंत्री सुरेंद्रसिंह जाड़ावत ने कहा है कि राजस्थान सरकार के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के द्वारा चलाए जा रहे अवैध खनन विरोधी अभियान का चित्तौड़गढ़ में कोई असर नहीं है उल्टा बड़ी मात्रा में अवैध बजरी परिवहन माफियाओं द्वारा किया जा रहा है, सेमलपुरा में हुई अजयराज की हत्या, एवं कपासन में सूरज माली प्रकरण में भी बजरी माफियाओं का नाम आने के बाद भी बजरी व्यवसाय पर अंकुश नहीं लगाया गया है, स्थानीय जनप्रतिनिधि सहित अन्य भाजपा जनप्रतिनिधियों द्वारा इस व्यवसाय से जुड़े होने के कारण चित्तौड़गढ़ में यह अभियान मूर्तरूप नहीं ले पा रहा है अन्य क्षेत्रों में कार्यवाही हो रही है, अवैध बजरी पर कार्यवाही न होने से स्थानीय लोग प्रशासन की ढिलाई और मिलीभगत का आरोप लगाते हैं, जिसके कारण बजरी माफिया बेखौफ होकर खनन और परिवहन कर रहे हैं, जिससे सड़कें खराब हो रही हैं और दुर्घटनाओं का खतरा बढ़ रहा है, अवैध खनन से सरकार को राजस्व का नुकसान होता है, वहीं निर्माण कार्यों के लिए बजरी महंगी हो रही है, जिससे आम आदमी प्रभावित हो रहा है, कोशिश करने के बाद भी प्रशासन अवैध 'बजरी' खनन पर अंकुश लगाने में विफल रहा है।

डांगी पटेल समाज की खेलकूद प्रतियोगिता सम्पन्न, गिलुंड विजेता रहा, उपविजेता नया मायरा रहा

▪ स्मार्ट हलचल

शंभूपुरा। डांगी पटेल समाज की 13वीं खेलकूद प्रतियोगिता का समापन खेल मैदान लांगच पर हुआ।

आयोजक कमेटी सदस्य देवीलाल डांगी ने बताया कि इस प्रतियोगिता के कब्बड्डी की 60 टीमों ने भाग लिया कब्बडी में विजेता गिलुंड टीम रही व उप विजेता नया मायरा की टीम रही। वॉलीबॉल की विजेता सोमावास रहा, उप विजेता खोड़ीप की टीम रही।

बालिका वर्ग में कब्बड्डी में ठिकरिया की टीम विजेता रहीं व उप विजेता कोदीया खेड़ी की टीम रही।

इस फाइनल प्रतियोगिता के दिन अंडर 18 पुरुष वर्ग की मैच भी खेले गये जो कब्बड्डी में सतखंडा की टीम विजेता रहीं व रतनपुर उप विजेता रहा। वॉलीबॉल में देवरी विजेता व उप विजेता सोमावास की टीम रही। रस्साकसी की विजेता पिनोदडा व उप विजेता सतखंडा रहीं।

इस समापन कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रतापगढ़ जिला अध्यक्ष अनिल डांगी ने की, मुख्य अतिथि पूर्व विधायक एवं भूमि विकास बैंक,चेयरमैन बद्रीलाल जाट थे।

विशिष्ट अतिथि पूर्व जिला प्रमुख गब्बरसिंह अहीर, रामसिंह डांगी प्रतापगढ़, पूर्व मंडल अध्यक्ष रतन डांगी, मंडल अध्यक्ष दिनेश पाराशर, मण्डल महामंत्री कैलाश सुखवाल, मीडिया प्रभारी हरीश सुखवाल, जीएस एस अध्यक्ष बद्रीलाल जाट, खेलमंत्री मंगनीराम डांगी, जिला अध्यक्ष राजमल डांगी, पूर्व अध्यक्ष नटवर डांगी, महामंत्री कैलाश डांगी, रामलाल तेजपुरा, सचिव देवीलाल डांगी, पूर्व प.स. सीमा डांगी, जिला प्रवक्ता शोभालाल डांगी, संघठन मंत्री हीरालाल, पालोद सरपंच सुरेश डांगी,लांगच सरपंच शांतिलाल डांगी, सामरी सरपंच प्रतिनिधि कुकालाल, सेमलिया सरपंच प्रतिनिधि राजू डांगी, देवरी सरपंच प्रतिनिधि मंगनीराम डांगी, असावरा मंडल महामंत्री सुरेश सोमावास, समाजसेवी रामचंद्र ठिकरिया, कैलाश मायरा, लालूराम डांगी थे, आयोजन कमेटी से रमेश, नंदराम, शौकीन, भगवानलाल, नारायण लाल, फतह लाल, पप्पू , बद्री, अनिल, मुकेश, पूरण, रोशन, शांति लाल, गोविंद, डालचंद, हीरालाल, मिठू लाल, नाना लाल आदि मौजूद रहें।

इस समापन के मौके पर अतिथियों द्वारा विजेता और उप विजेताओ को पारितोषिक ईनाम दिया गया। समाज की अगली 14वीं खेलकूद प्रतियोगिता गांव गिलुंड में होंगी।

फांसी पर झूला बैक लगने से परेशान कर्वी चित्रकूट का बीए एम एस छात्र शैलेन्द्र

▪ स्मार्ट हलचल

आईआईटी समेत कानपुर में पहले भी कई मेधावी छात्र कर चुके हैं आत्महत्या

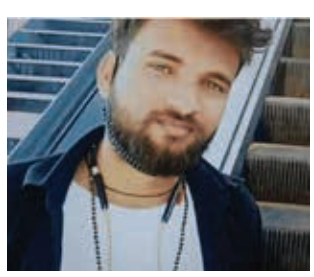

कानपुर। उच्च शिक्षा ग्रहण करने के दौरान असफलता के रूप में आने वाली परेशानियां .प्रतिभावान युवाओं को भी मौत को गले लगाने के लिए मजबूर कर रही हैं। ऐसी घटना में चित्रकूट जिले के कर्वी में रहने वाले बीएएमएस के छात्र ने यहां अपने कमरे में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। आज रविवार को पोस्टमार्टमकिए जाने के बाद उसके शव को परिवार वाले रोते बिलखते घर लेकर चले गए। वह अपने पेपर में बैक लगने से बहुत परेशान था और इसी वजह से उसने दुनिया को अलविदा कह दिया। बेटे की मौत से बदहवास पिता कानपुर नहीं आए। पुलिस द्वारा सूचित किए जाने पर शनिवार देर शाम मृतक शैलेंद्र कुमार (27) के कानपुर पहुंचे परिजन बड़े भाई लालेंद्र, जीजा उमाशंकर, मामा शंकर गुप्ता, भांजा मनी गुप्ता और लालेंद्र के तीन दोस्त सबसे पहले मंधना स्थित शैलेंद्र के कमरे पहुंचे। इसके बाद उसके कॉलेज के दोस्तों से जानकारी ली। इसबीच भाई लालेंद्र ने बताया कि 2020 से कोटा राजस्थान से नीट की तैयारी कर रहा शैलेंद्र 2019 से घर से बाहर रह रहा था। इसके बाद 2021 में उसे रामा आयुर्वेदिक इंस्टीट्यूट में दाखिला मिला था। प्राइवेट हॉस्पिटल में जॉब करने वाले बड़े भाई ने बताया-सुसाइड से 30 मिनट पहले बहन और मेरी शैलेंद्र से बात हुई थी। बातचीत में ऐसा लगा ही नहीं कि वह सुसाइड कर लेगा। कुछ देर बाद घर में पुलिसवालों ने फांसी लगाई जाने की सूचना उसके परिवार को दी। जिसको सुनते ही परिवार में कोहराम मच गया और शैलेंद्र के पिता बदहवास हो गए। घटना की संभावित वजह के बारे में जानकारी देते हुए भाई ने बताया मेधावी छात्र शैलेंद्र बैक लगने के बाद वह परेशान था। वह मूल रूप से चित्रकूट कर्वी का रहने वाला था। अवगत कराते चलें कि किसी मेधावी छात्र द्वारा आत्महत्या की यह घटना पहली नहीं है। इसके पहले भी इस महानगर में और भी कई छात्र इसी तरह से किसी ने किसी वजह से मौत को गले लगाने को मजबूर हो चुके हैं, जिसमें आईआईटी के छात्र द्वारा भी गत दिवस आत्महत्या किए जाने का प्रकरण चर्चा का विषय बना हुआ है। इस मामले की जांच पुलिस लगातार कर रही है

वाइट-कॉलर आतंकवादः राष्ट्र के भीतर पनपता अदृश्य खतरा

▪ शाश्वत तिवारी

▪ स्मार्ट हलचल

देश के भीतर हो रही शिक्षा, प्रतिष्ठा और आतंक की खतरनाक जुगलबंदी पर रक्षामंत्री राजनाथ सिंह द्वारा 'वाइट-कॉलर आतंकवाद' को लेकर व्यक्त की गई चिंता केवल एक राजनीतिक बयान नहीं, बल्कि भारत की आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था के लिए गंभीर चेतावनी है। उदयपुर में दिए गए उनके वक्तव्य ने एक ऐसे खतरे की ओर ध्यान खींचा है, जो अब बंदूकधारी या जंगलों में छिपे आतंकियों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि शहरों, अस्पतालों, प्रयोगशालाओं, कॉर्पोरेट दफ्तरों और शिक्षण संस्थानों के भीतर चुपचाप पनप रहा है। दिल्ली में हालिया बम विस्फोट की घटना, जिसमें आरोपी एक शिक्षित डॉक्टर बताया गया, इस सच्चाई को और भी भयावह बना देती है कि आतंक का नया चेहरा पढ़ा-लिखा, पेशेवर और सामाजिक रूप से सम्मानित हो सकता है। परंपरागत रूप से 'वाइट-कॉलर क्राइम' शब्द का प्रयोग आर्थिक अपराधों, जैसे घोटाले, टैक्स चोरी, कॉर्पोरेट फ्रॉड के लिए किया जाता रहा है। लेकिन वाइट-कॉलर आतंकवाद उससे कहीं अधिक खतरनाक अवधारणा है। यह वह स्थिति है, जब अत्यंत शिक्षित, तकनीकी रूप से दक्ष, सामाजिक रूप से प्रतिष्ठित व्यक्ति आतंकवादी गतिविधियों, साजिशों या हिंसक राष्ट्रविरोधी कृत्यों में संलिप्त पाए जाते हैं।

यह आतंकवाद इसलिए खतरनाक है क्योंकि

यह पहचान में नहीं आता। यह सिस्टम के भीतर रहकर सिस्टम पर हमला करता है और यह कानून व समाज, दोनों की आंखों में धूल झोंकता है। 21वीं सदी में आतंकवाद केवल सीमा पार से आने वाला खतरा नहीं रह गया है। अब यह कट्टर विचारधाराओं, डिजिटल नेटवर्क, अकादमिक कट्टरता, बौद्धिक उग्रवाद के रूप में सामने आ रहा है। पहले आतंकवादी की पहचान हथियार, संदिग्ध गतिविधि, चरमपंथी संगठन से होती थी। आज पहचान धुंधली है, वह कोई डॉक्टर हो सकता है, इंजीनियर, प्रोफेसर, वैज्ञानिक या आईटी विशेषज्ञ इनमें से कोई भी हो सकता हैं। यह मान्यता लंबे समय तक रही कि शिक्षा, व्यक्ति को उदार और जिम्मेदार बनाती है। लेकिन हालिया घटनाएं बताती हैं कि शिक्षा अगर मूल्यहीन हो, तो वह हथियार बन जाती है। उच्च शिक्षा, अगर नैतिकता से रहित हो, अगर राष्ट्रबोध से कटी हो, अगर सामाजिक जिम्मेदारी से शून्य हो, तो वही शिक्षा आतंक की प्रयोगशाला बन सकती है। पिछले दिनों दिल्ली में हुए बम विस्फोट के मामले में लखनऊ की एक डॉक्टर का नाम सामने आना, कई बड़े सवाल खड़े करता है। क्या हमारी इंटेलिजेंस प्रोफाइलिंग अधूरी है? क्या हम अब भी अपराधी को केवल उसकी सामाजिक पहचान से आंकते हैं? क्या पेशेवर प्रतिष्ठा कानून से ऊपर हो गई है? दिल्ली की यह घटना स्पष्ट करती है कि आतंकवाद अब 'हाशिए के लोग' नहीं, बल्कि 'मुख्यधारा के चेहरे' भी अपना रहा है। जानकारों की राय में, कुछ लोग अत्यधिक पढ़े-लिखे होते हुए भी, कट्टर विचारधाराओं के शिकार हो जाते हैं, स्वयं को 'विशेष सत्य' का वाहक मानने लगते हैं। वो मानते है कि, अत्यधिक शिक्षा कभी-कभी व्यक्ति को कानून से ऊपर, समाज से अलग और नैतिक नियंत्रण से मुक्त मानने की भ्रांति में डाल देती है।

वहीं, दूसरी ओर ये भी साफ हैं कि आज कट्टरता किताबों से नहीं, बल्कि ऑनलाइन फोरम, डार्क वेब और एन्क्रिप्टेड चैट से फैल रही है। पेशेवर संस्थानों में नैतिक प्रशिक्षण की कमी, मानसिक स्वास्थ्य की अनदेखी राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौती।

वाइट-कॉलर आतंकवादी सिस्टम को जानते हैं।

कमजोरियों की पहचान करते हुए वो तकनीक का दुरुपयोग करते हैं। वे साइबर आतंक, जैविक हथियार, रासायनिक विस्फोट और स्लीपर सेल जैसे खतरों को जन्म दे सकते हैं। यह आतंकवाद सीमा से नहीं, भीतर से हमला करता है, जो आज कानून व्यवस्था के सामने नई चुनौती बन के सामने खड़ा हुआ हैं। भारत की कानून व्यवस्था अब तक पारंपरिक अपराधों के लिए प्रशिक्षित रही है, लेकिन वाइट-कॉलर आतंकवाद के लिए, अब एक नया दृष्टिकोण चाहिए।

प्रोफाइलिंग केवल आर्थिक नहीं, वैचारिक भी हो, इंटेलिजेंस नेटवर्क शिक्षा और पेशेवर संस्थानों तक पहुंचे। संदिग्ध गतिविधि की परिभाषा बदले समाज की भूमिका यह केवल सरकार की लड़ाई नहीं है। सभी भारतीय परिवारों को सतर्क होना होगा, अब समाज आ गया है कि शिक्षकों को सिर्फ पाठ्यक्रम नहीं, मूल्य भी सिखाने होंगे।

मीडिया को सनसनी नहीं, समझ पैदा करनी होगी। समाज को यह समझना होगा कि अत्यधिक कट्टरता, चाहे वह कितनी भी शिक्षित क्यों न हो, खतरनाक है। शिक्षा व्यवस्था में सुधार की जरूरत आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। नैतिक शिक्षा को अनिवार्य करने की संवैधानिक मूल्यों पर आधारित पाठ्यक्रम की आलोचनात्मक सोच, न कि कट्टर सोच की शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ नौकरी नहीं, बल्कि जिम्मेदार नागरिक बनाना होना चाहिए। वाइट-कॉलर आतंकवाद पर राजनाथ सिंह की चिंता, इस बात का संकेत है कि सरकार खतरे को पहचान रही है, लेकिन पहचान के साथ कठोर और दूरदर्शी नीति भी जरूरी है।

आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई, केवल हथियारों से नहीं, बल्कि विचारों से लड़ी जाती है। वाइट-कॉलर आतंकवाद भारत के लिए अदृश्य, जटिल और अत्यंत खतरनाक चुनौती है। यह चुनौती हमें याद दिलाती है कि डिग्री, देशभक्ति की गारंटी नहीं होती। जब तक शिक्षा मूल्यवान नहीं होगी, कानून सख्त और निष्पक्ष नहीं होगा और समाज जागरूक व सतर्क नहीं होगा, तब तक यह खतरा और गहराता जाएगा। अब समय है आंखें खोलने का, भ्रम तोड़ने का और यह स्वीकार करने का कि आतंक का चेहरा बदल चुका है।

इंदौर जल प्रदूषण संकट : दर्पण झूठ न बोले

▪ तनवीर जाफ़री

▪ स्मार्ट हलचल

मध्य प्रदेश के महानगर इंदौर के भागीरथपुरा इलाक़े में दिसंबर 2025 के जाते जाते दूषित पेयजल की वजह से एक बड़ा स्वास्थ्य संकट पैदा हो गया। इस घटना ने उस इंदौर शहर की हक़ीक़त को उजागर कर दिया जिसे भारत का सबसे स्वच्छ शहर होने का गौरव भी हासिल है। ग़ौर तलब है कि जुलाई 2025 में घोषित स्वच्छ सर्वेक्षण 2024-25 के परिणामों के अनुसार इंदौर ने लगातार आठवीं बार देश के सबसे स्वच्छ शहर का ख़िताब जीता है। यह भारत सरकार के आवास एवं शहरी मामलों के मंत्रालय द्वारा कराया जाने वाला विश्व का सबसे बड़ा शहरी स्वच्छता सर्वेक्षण बताया जाता है। यह रैंकिंग कचरा प्रबंधन, नागरिक भागीदारी, स्वच्छता और स्वच्छता सम्बन्धी अन्य मानकों पर आधारित है। हालांकि गत वर्षांत में इंदौर में स्वच्छ पानी की पाइप लाइन में सीवरेज के गंदे व प्रदूषित पानी मिले होने की घटना स्वच्छता सर्वेक्षण के दायरे यानी मुख्य रूप से सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट से अलग मुद्दा है, लेकिन निश्चित रूप से इस घटना ने इंदौर के नंबर वन होने के 'ख़िताब' पर प्रश्न चिन्ह ज़रूर खड़ा कर दिया है। इस घटना से एक सवाल यह भी खड़ा हो गया है कि जब लगातार आठ बार भारत के सबसे स्वच्छ रहने का ख़िताब जीतने वाले महानगर इंदौर के लोग सीवरेज युक्त पेयजल पीने को मजबूर हैं तो उन शहरों का क्या जिनकी गिनती ही देश के गंदे शहरों में होती है ?

इस घटना के बाद सत्ता की ओर से कई तरह की 'बाज़ीगरी' करने की कोशिश की गयी। लोगों की मौतों के आंकड़े को छुपाने व कम बताने की कोशिश की गयी। एक तरफ़ अस्पताल की रिपोर्ट व प्रभावित परिजनों के दावे 16 लोगों की मौत की पुष्टि कर रहे थे तो राज्य सरकार उच्च न्यायलय में केवल चार लोगों की मौत का दावा करती रही। ख़बरों के अनुसार इस घटना से 1400 से अधिक लोग उल्टी, दस्त, डिहाइड्रेशन और बुख़ार जैसी समस्याओं से प्रभावित हुए। इनमें से लगभग 260 लोग अस्पताल में भर्ती हुए। उधर इसी विषय पर मध्य प्रदेश सरकार के वरिष्ठ मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने इंदौर में दूषित पानी से कई लोगों की मौत और बीमारी के मामले पर मीडिया के सवालों से नाराज़ होकर एक पत्रकार से निहायत बदतमीज़ी भरा व्यवहार किया। जब उनसे एक टी वी रिपोर्टर ने पूछा कि साफ़ पानी की व्यवस्था क्यों अपर्याप्त है। इस पर विजयवर्गीय भड़क गए और कहा, 'छोड़ो यार, फोकट (फालतू) के सवाल मत पूछो।' 'क्या घंटा होकर आए हो तुम?' जैसे आपत्तिजनक शब्द का इस्तेमाल किया। हालांकि बाद में विजयवर्गीय ने माफ़ी मांग कर मामले को रफ़ा दफ़ा करने की कोशिश ज़रूर की परन्तु तब तक इन घटिया शब्दों द्वारा व्यक्त किये गये उनके भीतर के 'उदगार ' उनकी सरकार की विफलता की खीज के रूप में प्रकट हो चुके थे।

बहरहाल इस घटना ने देश की उस वास्तविकता को एक बार फिर बेनक़ाब कर दिया है जहाँ विकास के तमाम दावों व आंकड़ों के बावजूद देश के आम लोगों को अभी तक पीने का साफ़ पानी तक मयस्सर नहीं है। वास्तव में भारत में प्रदूषित जल का सेवन एक लंबे समय से चली आ रही समस्या है, जो औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, कृषि क्रांति और जनसंख्या वृद्धि से जुड़ी हुई है। यह समस्या न केवल स्वास्थ्य पर असर डालती है, बल्कि आर्थिक और पर्यावरणीय नुक़सान भी पहुंचाती है। गंगा और यमुना जैसी देश की अनेक नदियों में अनुपचारित सीवेज और औद्योगिक अपशिष्ट डालना भी जलजनित बीमारियों का मुख्य कारण है। हरित क्रांति के दौर में जब उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग बढ़ा, उस दौर में भूजल में नाइट्रेट प्रदूषण फैलने की ख़बरें आईं। उस समय देश के 56% जिलों में इसका प्रभाव पाया गया। इसी तरह डी डी टी जैसे कीटनाशकों के अत्यधिक उत्पादन व प्रयोग से इनके अवशेष जल में बने रहे। साथ ही औद्योगिक विकास के नाम पर नदियों में लीड, कैडमियम, आर्सेनिक जैसी भारी धातुओं का प्रदूषण बढ़ा। इस दौर में भी कॉलरा(हैज़ा) और डायरिया जैसी महामारियां बढ़ीं, और मौतों की संख्या में और भी वृद्धि हुई। सूत्रों के अनुसार आज भी भूजल अर्थात 85% ग्रामीण इलाक़ों में पीने का पानी नाइट्रेट, धातुओं और बैक्टीरिया से प्रदूषित है। इसके अलावा बाढ़ से भी प्रदूषण बढ़ता है।

अब रहा सवाल जल आपूर्ति लाइन में सीवरेज का पानी मिलकर प्रदूषित जल आपूर्ति होने का, तो यह कोई अकेले इंदौर की समस्या मात्र नहीं बल्कि देश के तमाम शहर व इलाक़े ऐसी समस्याओं का शिकार हैं। उल्टी, दस्त, डिहाइड्रेशन और बुख़ार जैसी बीमारी की समस्यायें आज घर घर की समस्याएं बन चुकी हैं। इसका मुख्य कारण है भूमिगत जल पाइप लाइन का प्रायः भूमिगत सीवर लाइनों के साथ साथ या उसके समानांतर बिछा होना। यह समस्या उस समय और भी विकराल रूप धारण कर लेती है जबकि सीवर लाइनें ओवर फ़्लो हो कर भूमिगत सीवरेज रिसाव को बढ़ाती हैं और साथ ही यदि भूमिगत जल पाइप लाइन में भी लीकेज हो तो सीवर और पीने के पानी मिक्स हो जाता है। वास्तव में यह समस्या ग़लत योजना,भ्रष्टाचारपूर्ण निर्माण, समय पर रखरखाव का अभाव,प्रशासनिक लापरवाही व ऐसी समस्याओं की लगातार अनदेखी करने के कारण होती हैं।

यही वजह है कि प्राप्त आंकड़ों के अनुसार जल और स्वच्छता से संबंधित बीमारियों से लगभग 400,000 मौतें प्रति वर्ष दर्ज होती हैं जबकि प्रदूषित पानी से लगभग 300,000 बच्चे प्रतिवर्ष मरते हैं तथा डायरिया से क़रीब 1,600 मौतें प्रतिदिन होती हैं। विश्व बैंक के अनुसार ऐसी 21% संक्रामक बीमारियां असुरक्षित जल से जुड़ी हैं । देश की आर्थिक स्थिति पर भी इसका प्रभाव पड़ता है। पर्यावरणीय क्षति से 3.75 ट्रिलियन रुपये अर्थात 80 बिलियन डॉलर का वार्षिक नुक़सान होता है क्योंकि इससे स्वास्थ्य लागत लगभग 470-610 बिलियन रुपये यानी 6.7-8.7 बिलियन बढ़ जाती है। साथ ही प्रदूषित क्षेत्रों में कृषि राजस्व में 9% की और उपज में 16% की अनुमानित कमी आती है।

लिहाज़ा यह कहना ग़लत नहीं होगा कि इंदौर के भागीरथपुरा क्षेत्र में सीवर मिश्रित दूषित पानी से हुई 15 (फ़िलहाल) मौतों ने यह साबित कर दियाहै कि 'इंदौर में स्वच्छ पानी नहीं, बल्कि ज़हर मिश्रित जलापूर्ति की गयी। स्थानीय लोगों द्वारा बार-बार गंदे, बदबूदार पानी की शिकायत की गयी, फिर भी कोई सुनवाई नहीं हुई? सीवर का प्रदूषित मलयुक्त जल पीने के पानी में कैसे मिला? समय पर सप्लाई बंद क्यों नहीं की गई? ज़ाहिर है कि स्वच्छ जल हासिल करना प्रत्येक देशवासियों के जीवन का अधिकार है। परन्तु इंदौर में उपजे जल प्रदूषण संकट से भारतीय जनता पार्टी की कथित डबल इंजन सरकार ने यह साबित कर दिया है कि दर्पण कभी भी झूठ नहीं बोलता।

विश्व युद्ध अनाथ दिवस

▪ स्मार्ट हलचल /-सुभाष बुड़ावन वाला

बचपन जीवन का वह स्वर्णिम काल होता है जिसमें सपने बेफिक्र होते हैं, हँसी सहज होती है और भविष्य का बोझ कंधों पर नहीं होता, लेकिन दुनिया के लाखों बच्चों के लिए यह सुखद कल्पना मात्र बनकर रह जाती है क्योंकि युद्ध, हिंसा और संघर्ष उनसे न केवल उनके माता-पिता बल्कि उनका पूरा बचपन छीन लेते हैं, इसी कटु सच्चाई की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए हर वर्ष 6 जनवरी को विश्व युद्ध अनाथ दिवस मनाया जाता है, यह दिन उन मासूम चेहरों की पीड़ा को सामने लाता है जिनकी आँखों ने खेलने की उम्र में बम, गोलियाँ और खून देखा है, यूनिसेफ की परिभाषा के अनुसार 18 वर्ष से कम उम्र का वह बच्चा जिसने अपने माता-पिता को खो दिया हो अनाथ कहलाता है.

लेकिन युद्ध अनाथों की स्थिति इससे कहीं अधिक भयावह होती है क्योंकि वे केवल पारिवारिक संरक्षण ही नहीं खोते बल्कि सुरक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य और भावनात्मक सहारे से भी वंचित रह जाते हैं, एक अंतरराष्ट्रीय मानवीय रिपोर्ट के अनुसार हाल के दशकों में युद्धों और आंतरिक संघर्षों के कारण करोड़ों बच्चे अनाथ हुए हैं और इनमें से लगभग आधे ऐसे क्षेत्रों में रहते हैं जहाँ बुनियादी सुविधाएँ भी उपलब्ध नहीं हैं, इतिहास बताता है कि विश्व युद्ध अनाथ दिवस की पहल फ्रांस के संगठन एसओएस एनफैंट्स एन डिट्रेस ने की थी, ताकि वैश्विक समुदाय का ध्यान इस उपेक्षित संकट की ओर जाए.

युद्धग्रस्त देशों में इन बच्चों को अक्सर विस्थापन, कुपोषण, बाल श्रम, बाल विवाह और तस्करी जैसे खतरों का सामना करना पड़ता है, मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार बचपन में झेला गया हिंसक आघात उनके मन पर गहरे घाव छोड़ देता है जिससे अवसाद, भय, आक्रोश और बदले की भावना पनप सकती है, कई बार सबसे बड़ा भाई या बहन होने के कारण बच्चों को समय से पहले जिम्मेदारियाँ उठानी पड़ती हैं जिससे उनका स्वाभाविक विकास बाधित हो जाता है.

संयुक्त राष्ट्र के आंकड़े बताते हैं कि युद्धों से प्रभावित नागरिक आबादी में बच्चों की हिस्सेदारी लगभग पचास प्रतिशत तक होती है जो इस संकट की गंभीरता को दर्शाती है, राहत शिविरों और अनाथालयों में रहने वाले बच्चों को सामाजिक भेदभाव का भी सामना करना पड़ता है जिससे वे स्वयं को समाज से कटा हुआ महसूस करते हैं, हालांकि यह भी सच है कि दुनिया भर में अनेक गैर सरकारी संगठन, समाजसेवी और स्वयंसेवक इन बच्चों के पुनर्वास, शिक्षा और मानसिक उपचार के लिए निरंतर कार्य कर रहे हैं.

आधुनिक समय में डिजिटल तकनीक और वैश्विक सहयोग के माध्यम से युद्ध अनाथों की पहचान और सहायता पहले से अधिक प्रभावी ढंग से की जा रही है, विश्व युद्ध अनाथ दिवस हमें केवल सहानुभूति व्यक्त करने का अवसर नहीं देता बल्कि यह जिम्मेदारी भी सौंपता है कि हम युद्ध के दुष्परिणामों को समझें, शांति की आवाज़ बुलंद करें और ऐसे बच्चों के लिए सुरक्षित, सम्मानजनक और आशापूर्ण भविष्य बनाने में अपना योगदान दें क्योंकि जब तक एक भी बच्चे से उसका बचपन छीना जा रहा है तब तक मानवता की जीत अधूरी ही मानी जाएगी.,रतलाम.मप्र

पर्यटन का खास मुकाम डल झील

डल झील श्रीनगर, कश्मीर में तो प्रसिद्ध है ही लेकिन दुनिया भर के सैलानियों के लिए भी यह पर्यटन का एक खास मुकाम है। कहा जाता है कि इसमें स्त्रोतों से जल आता है एवं यह झील खुद ही कश्मीर घाटी में काफी झीलों से जुड़ी हुई है।

यह दुनिया भर में शिकारों या हाऊस बोट के लिए जानी जाती है और सैलानी खासतौर पर इनका आनंद लेने के लिए यहां आते हैं। यह 18 किलोमीटर क्षेत्र में फैली हुई है। तीन दिशाओं से पहाड़ियों से घिरी डल झील जम्मू कश्मीर की दूसरी सबसे बड़ी झील मानी जाती है और भारत की सबसे सुंदर झीलों में इसे शामिल किया जाता है। पर्यटक जम्मू-कश्मीर आएं और डल झील देखने न जाएं ऐसा हो ही नहीं सकता।

डल झील के पास ही मुगलों के सुंदर एवं प्रसिद्ध पुष्प वाटिका से झील की आकृति और उभरकर सामने आती है। मुख्य रूप से इस झील में मछली का काम होता है। डल झील के मुख्य आकर्षण का केंद्र हैं यहां के हाउसबोट। सैलानी इन हाउसबोटों में रहकर इस खूबसूरत झील का आनंद उठा सकते हैं।

झील, कश्मीर की घाटियों की अन्य धाराओं के साथ मिल जाती है। झील के चार जलाशय हैं गगरीबल, लोकुट डल, बोड डल तथा नागिन। लोकट डल के मध्य में रूप लंक द्वीप स्थित है, तथा बोड डल जलधारा के मध्य में सोना लंक स्थित है। वनस्पति डल झील की खूबसूरती को और निखार देती है। कमल के फूल, पानी में बहती कुमुदनी, झील की सुंदरता को दुगुना कर देती है।

सैलानियों के लिए झील के सौंदर्य के अलावा भी विभिन्न प्रकार के मनोरंजन के साधन यहां पर उपलब्ध हैं। जैसे कि कायाकिंग, केनोइंग डोंगी पानी पर सर्फिंग करना व ऐंगलिंग मछली पकड़ना आदि से सफर और ज्यादा रोमांचक हो जाता है। कश्मीर के प्रसिद्ध विश्वविद्यालय झील के तट पर स्थित है। हाउसबोट में रहकर सैलानी इस झील के खूबसूरत वातावरण से भावविभोर हो जाते हैं।

शिकारे के माध्यम से सैलानी नेहरूपार्क, कानुटूर खाना, चारचिनारी, कुछ द्वीप जो यहां पर स्थित हैं, उन्हें देख सकते हैं। श्रद्धालुओं के लिए हजरतबल तीर्थस्थल के दर्शन करे बिना उनकी यात्रा अधूरी रह जाती है। शिकारे के माध्यम से श्रद्धालु इस तीर्थस्थल के दर्शन कर सकते हैं। एक शिकारे पर सवार होकर विभिन्न प्रकार की कश्मीरी चीजें भी खरीद सकते हैं और दुकानें भी शिकारे पर ही लगी होती हैं। यह माल खरीददार तक ही सीमित नहीं है, परन्तु एक रोमांचित कर देने वाला खेल भी होगा।

कैसे जाएं: यदि पर्यटक डल झील पहुंचना चाहते हैं, तो श्रीनगर जिले से 25 किलोमीटर की दूरी पर बडगाम जिले में स्थित एयरपोर्ट पर पहुंच सकते हैं। नजदीक रेल सेवा जम्मू में स्थित है, तथा वहां का नेशनल हाईवे एनएचए कश्मीर घाटी को देश के अन्य भागों से जाड़ता है। इन पहाड़ी इलाकों पर यात्रा करने के लिए दस से बारह घंटे लगते हैं। इस सफर के दौरान पर्यटक यहां के प्रसिद्ध जवाहर टनल को निहार सकते हैं।

धर्मशाला में उठायें बर्फली पहाड़ियों का रोमांच

पहाड़ियों में चीड़ व देवधर के घने जंगलों और बर्फ को करीब से देखने का अनुभव धर्मशाला में मिलता है। यहां सीधे-सादे और बौध धर्म के बिरले चिन्ह भी यहां आसानी से देखने को मिलते हैं। धर्मशाला में झरने व सुहाने नजारे इस जगह को सभी की पसंद बनाते हैं। हालांकि अब यहां तिब्बत के लोग ज्यादा रहते हैं, लेकिन ब्रिटिश काल का प्रभाव इस छोटे शहर पर आज भी महसूस किया जा रहा है।

खूबसूरत पहाड़ी शहर धर्मशाला को यूं तो अंग्रेजों ने बसाया था, लेकिन अब तिब्बतियों की संख्या ज्यादा होने से इस पर वहां के कल्चर का इतना प्रभाव पड़ा है कि इसे लिटल ल्हासा के नाम से जाना जाता है। हिमाचल प्रदेश में धौलाधर की पहाड़ियों में बसा धर्मशाला देश-विदेश के सैलानियों का पसंदीदा हिल स्टेशन है। इसे साल 1855 में अंग्रेज ने इसे बसाया था। दरअसल, यह उन 80 रिजॉर्ट्स में से था, जिन्हें अंग्रेजों ने गर्मी से बचने के लिए तैयार करवाया था।

गद्दी, तिब्बती, टेकर्स, टूरिस्ट और लोकल वेंडर्स, सब मिलकर निचले धर्मशाला यानी कोतवाली बाजार में एक अलग ही माहौल बनाते हैं। यह जगह समुद्र तल से 1250 मीटर की ऊंचाई पर है। लोगों का खूब आना-जाना होने की वजह से यहां खासी हलचल रहती है। समुद्र तल से 1768 मीटर की ऊंचाई पर बसे ऊपरी धर्मशाला यानी मैकलॉडगंज में दलाई लामा का निवास है। दोनों जगह की दूरी 10 किलोमीटर है। जहां तक घूमने की बात है, तो धर्मशाला में आपको अडवेंचरस व स्प्रिचुअल माहौल मिलेगा। ठंडी पहाड़ी हवाओं में गूंजती प्रार्थनाओं की आवाजें मन को एक ठहराव देती हैं। ऐसे में बेशक धर्मशाला जाना दलाई लामा से मुलाकात के बिना अधूरा है और यकीन मानिए इस माहौल में उनका साथ किसी भी इंसान को कुछ देर के लिए एक अलग ही दुनिया में ले जाता है। वैसे,धर्मशाला की तमाम मोनेस्ट्रीज एक बार देखने लायक जरूर है और अलग-अलग समाधियों में भगवान बुद्ध की तांबे की प्रतिमाएं भी दर्शनीय हैं। अब जब इतना कुछ एक ही जगह पर मौजूद है तो देश-विदेश के पर्यटकों का सहज ही धर्मशाला की ओर खिंचे आना हैरानी की बात नहीं है। अगर आप मेडिटेशन करते हैं तो यहां के तुशिता मेडिटेशन सेंटर में मॉक्स द्वारा दी जाने वाली क्लासेज जॉइन की जा सकती है। यहां आपको साफ-सुथरे आवास की सुविधा भी मिलेगी। मेडिटेशन सीखने के बाद नेचुंग मोनेस्ट्री में 3किलोमीटर बना म्यूजियम देख सकते हैं। नोबरलिंगा इंस्टीट्यूट में आप नए आर्टिस्ट्स को थंगका पेंटिंग्स सीखते देख सकते हैं। अगर आप दाल, चावल, रोटी और सैंडविच खाकर बोर हो गए हैं तो यहां आप बेहतरीन तिब्बती खाने का मजा ले सकते हैं।

> धौलधार की पहाड़ियों में ट्रैकिंग व रॉक क्लाइबिंग जाने के लिए धर्मशाला शुरूआती पॉइंट है। यहां कई नदियों व झरनों में एंगलिंग व फिशिंग का मजा लिया जा सकता है। यहां का नजदीकी एयरपोर्ट गगला है, जिसकी यहां से दूरी 13 किलोमीटर है।

यहां के कई रेस्तरांओं में आपको लजीज मोमोज व थुक्पा खाने को मिलेंगे। खाने का लुत्फ लेने के बाद आप लंबी वॉक, ट्रेकिंग और खूबसूरत नजारों में पिकनिक का मजा ले सकते हैं। यहां से 8 किलोमीटर आगे आपको ब्रिटिश राज का मेमोरियल चर्च ऑफ सेंट जॉन-इन-द विल्डरनेस देख सकते हैं। इसे ब्रिटिश वायसरॉय लॉर्ड एलगिन के नाम पर बनाया गया है। निचले धर्मशाला में बना कांगड़ा आर्ट म्यूजियम कांगड़ा के सालों पुराने इतिहास को दिखाता है।

म्यूजियम की एक गैलरी में आपको कांगड़ा की मशहूर पेंटिंग्स, स्कल्पचर्स, मिट्टी के बर्तन और एंथ्रोपॉलजी से जुड़ी तमाम चीजें देखने को मिलेंगी। धर्मशाला के एंट्री पॉइंट पर आपको एक वॉर मेमोरियल देखने को मिलेगा, जिसे स्वतंत्रता की लड़ाई में शहीद होने वाले जवानों की याद में बनवाया गया है। धर्मशाला में धर्मकोट व डल लेक जैसे पिकनिक स्पॉट्स भी हैं और यहां सितंबर के महीने में हर साल एक बड़ा मेला भी लगता है।

इसी के पास भगसुनाथ की श्राइन भी है। इस पुराने मंदिर के पास से बहते ताजे पानी से झरने इस जगह को एक अलौकिक नजारा बना देते हैं। देवी कुणान पथरी को समर्पित मंदिर, ततवानी के गर्म पानी के झरने और मछरैल के बड़े वॉटरफॉल भी देखने लायक जगहें हैं। अगर वुड वर्क में दिलचस्पी रखते हैं तो नॉरबुलिंका इंस्टीट्यूट जरूर जाएं। यहां हो रहे काम की आर्ट को देखकर निश्चित तौर पर आप हैरान रह जाएंगे। स्वामी चिन्मानंद द्वारा बनाया गया चिन्मय तपोवन भी एक दर्शनीय जगह है। बिंदु सारस के किनारे बसे इस आश्रम में आपको नौ मीटर ऊंची हनुमान जी की मूर्ति, राम मंदिर, मेडिटेशन हॉल वगैरह दिखेंगे।

धौलधार की पहाड़ियों में ट्रैकिंग व रॉक क्लाइबिंग जाने के लिए धर्मशाला शुरूआती पॉइंट है। यहां कई नदियों व झरनों में एंगलिंग व फिशिंग का मजा लिया जा सकता है। यहां का नजदीकी एयरपोर्ट गगला है, जिसकी यहां से दूरी 13 किलोमीटर है। यहां से नजदीकी रेलवे स्टेशन पठानकोट है, जहां से धर्मशाला 85 किलोमीटर की दूरी पर है। सड़क मार्ग से यहां चंडीगढ़, कीरतपुर और बिलासपुर होते हुए पहुंचा जा सकता है। तिब्बती नए साल यानी मार्च के आस-पास यहां बहुत टूरिस्ट आते हैं। वैसे, मई से अक्टूबर के बीच ट्रैकिंग सीजन रहता है। धर्मशाला में हैंडीक्राफ्ट मसलन तिब्बती कार्पेट, टेक्स्टाइल, ट्रडिशनल, हैट्स, बैग्स, ट्राउजर्स, मेटलवर्क, जूलरी, जैकेट व हाथ से बने कार्डिगन आदि के शौकीनों के लिए ढेर सारी जगहें हैं।

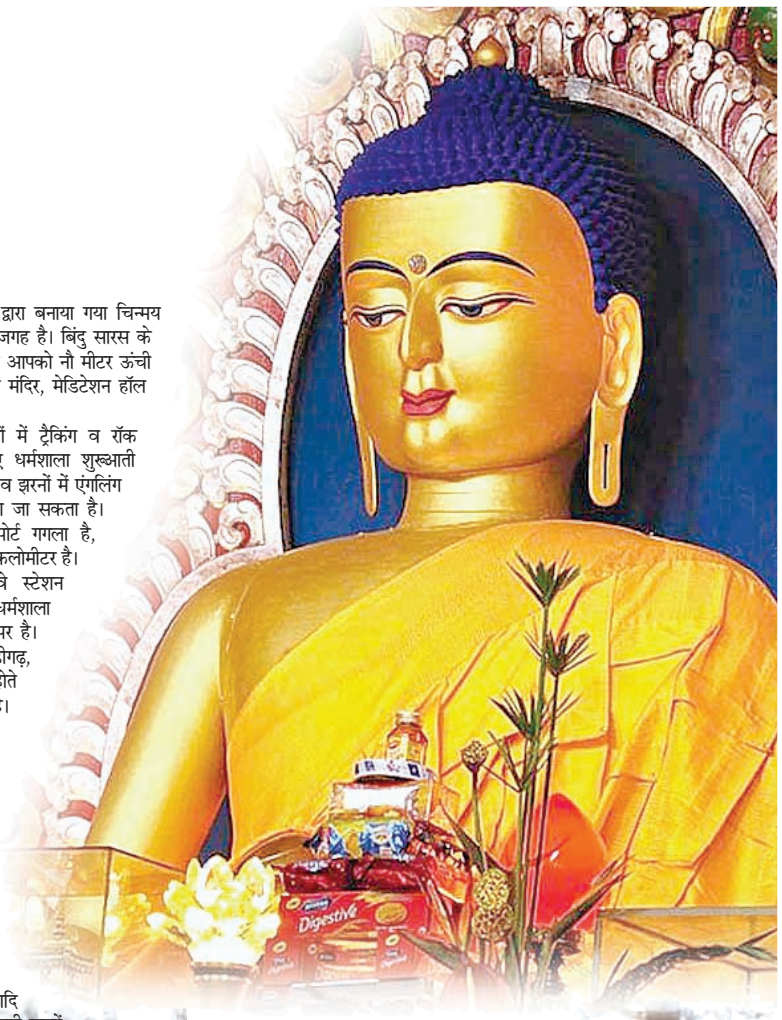

ड्राइविंग के क्षेत्र में दो तरह से कॅरियर बनाया जा सकता है। मसलन, आप स्वयं के व्यवसाय के स्वामी और चालक हो सकते हैं। इसके लिए आप ओला और उबर के तहत पंजीकृत कुछ टैक्सी प्राप्त करें और इस उद्योग के माध्यम से भी अच्छी कमाई करें।

कॅरियर के लिए अच्छा ऑप्शन साबित हो सकता है ड्राइविंग

ड्राइविंग एक ऐसा क्षेत्र है, जिसमें कॅरियर बनाने के बारे में शायद ही कोई युवा सोचता हो। यकीनन यह कोई फुल टाइम प्रोफेशन नहीं है लेकिन फिर भी अगर आप इसे एक कॅरियर या व्यवसाय के रूप में देखते हैं तो इसमें भी आपके विकास की अपार संभावनाएं मौजूद है। यह उन लोगों के लिए एक अच्छा कॅरियर ऑप्शन साबित हो सकता है, जो बहुत अधिक पढ़े-लिखे नहीं है, लेकिन फिर भी अच्छी आमदनी करके एक बेहतर जिन्दगी जीना चाहते हैं। तो चलिए आज हम आपको बताते हैं कि ड्राइविंग के क्षेत्र में कॅरियर बनाकर आप किस तरह अपने सपनों को पूरा कर सकते हैं-

ऐसे बनाएं कॅरियर

कॅरियर एक्सपर्ट बताते हैं कि ड्राइविंग के क्षेत्र में दो तरह से कॅरियर बनाया जा सकता है। मसलन, आप स्वयं के व्यवसाय के स्वामी और चालक हो सकते हैं। इसके लिए आप ओला और उबर के तहत पंजीकृत कुछ टैक्सी प्राप्त करें और इस उद्योग के माध्यम से भी अच्छी कमाई करें। इसके अलावा अगर आपके पास पर्याप्त पैसा नहीं है तो इस स्थिति में आप कुछ ओला व उबर आदि में बतौर कार चालक अपने कॅरियर की शुरूआत कर सकते हैं।

योग्यता

यह एक ऐसा क्षेत्र नहीं है, जिसके लिए किसी खास प्रोफेशनल डिग्री की आवश्यकता हो। आपको बस एक वाणिज्यिक ड्राइविंग लाइसेंस की आवश्यकता है और फिर कई ड्राइविंग स्कूल हैं जो आपको अपने आसपास के क्षेत्र में मिलेंगे। आप वहां से ड्राइविंग का प्रशिक्षण ले सकते हैं।

जरूरी स्किल्स

अगर आप सच में अपने कॅरियर को ग्रोथ देना चाहते हैं तो इसके लिए आपमें कुछ स्किल्स का होना बेहद आवश्यक है। सबसे पहले तो आपको बेहद अच्छी तरह से कार ड्राइव करनी आनी चाहिए। यह आपके कॅरियर के लिए सबसे पहली और जरूरी शर्त है। इसके अलावा आप जिस शहर में हैं, वहां की सड़कों की आपको अच्छी जानकारी होनी चाहिए। वैसे इन दिनों जीपीएस के जरिए भी रास्तों के बारे में पता लगाया जा सकता है। वहीं आपमें बेहतर कम्युनिकेशन स्किल होना भी बेहद आवश्यक है। सारा दिन आपकी गाड़ी में कई कस्टमर आएंगे, आपका उनके प्रति व्यवहार कैसा होगा, इस पर काफी कुछ निर्भर करता है।

संभावनाएं

इस क्षेत्र में कॅरियर ग्रोथ काफी अच्छी है। सबसे पहले तो आप ओला व उबर के अलावा कई ड्राइविंग कंपनियों में बतौर ड्राइवर काम कर सकते हैं। इसके अलावा अगर आप चाहें तो ड्राइविंग इंस्टीट्यूट में बतौर टेनर भी काम कर सकते हैं और दूसरे लोगों को कार चलाना सिखा सकते हैं। इसके अलावा कुछ लोगों को पर्सनल कार ड्राइवर की जरूरत होती है, आप उनके लिए भी काम कर सकते हैं। वहीं खुद भी कार या टैक्सी लेकर उसे ड्राइव कर सकते हैं। इस तरह आप खुद ही मालिक बन सकते हैं।

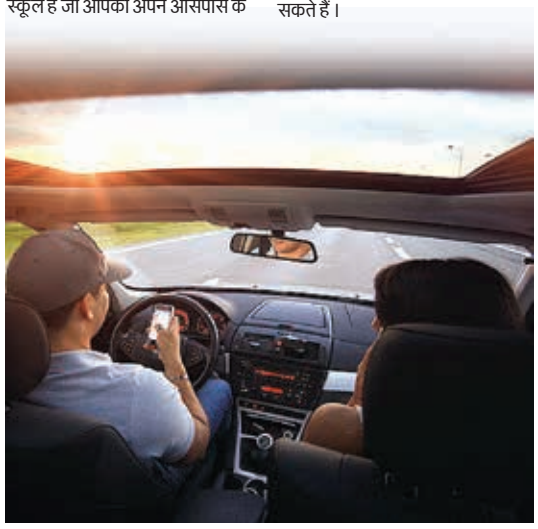

एक अच्छा मिक्सोलॉजिस्ट बनने के लिए अच्छा श्रोता होना व फ्रेंडली होना बेहद आवश्यक है। इसके अलावा एक्यूरेसी, बेहतर कम्युनिकेशन स्किल्स, आर्गेनाइजेशन स्किल्स, एनर्जेटिक, फ्लेक्सिबिलिटी, टीमवर्क, व क्रिएटिविटी जैसे गुण आपके काम को आसान बनाते हैं।

लीक से हटकर कुछ करना चाहते हैं तो मिक्सोलॉजी में देख सकते हैं अपना कॅरियर

अगर आप उनमें से हैं, जिन्हें नौ से पांच की जॉब करना अच्छा नहीं लगता। आप अपनी लाइफ में लीक से हटकर कुछ करना चाहते हैं तो ऐसे में मिक्सोलॉजी के क्षेत्र में अपना कॅरियर देख सकते हैं। यह एक बेहद ही डिफरेंट कॅरियर ऑप्शन है। एक मिक्सोलॉजिस्ट एक व्यक्ति है जो कॉकटेल और मिश्रित पेय बनाने के लिए विभिन्न प्रकार के मादक पेय और अन्य सामग्री को मिलाता है। आमतौर पर लोग मिक्सोलॉजिस्ट को बारटेंडर ही समझते हैं, लेकिन इनमें अंतर है। बारटेंडर केवल बार में होते हैं और केवल पहले से मौजूद डिंक्स को ही बनाते हैं। जबकि मिक्सोलॉजिस्ट कई नए तरह के कॉकटेल बनाता है। तो चलिए आज इस लेख में हम आपको इस कॅरियर के बारे में बता रहे हैं-

क्या होता है काम

एक मिक्सोलॉजिस्ट का काम बारटेंडर की तुलना में अधिक विस्तृत होता है। वे कई तरह की डिंक्स को मिक्स करके एक नया पेय पदार्थ बनाने के अलावा, बार को आर्गेनाइज करना, कस्टमर्स को नए डिंक्स के बारे में बताना और उन्हें एंटरटेन करना, नए पेय पदार्थों का सुझाव देना और मेन्यू में कुछ नए पेय पदार्थों को शामिल करना होता है। यह एक ऐसी जॉब है, जिसमें आप हर दिन कुछ नए एक्सपेरिमेंट करते हैं और खुद को एक्सप्लोर करते हैं। हालांकि यहां पर काम के कोई निश्चित घंटे नहीं होते।

स्किल्स

कॅरियर एक्सपर्ट बताते हैं कि एक अच्छा मिक्सोलॉजिस्ट बनने के लिए अच्छा श्रोता होना व फ्रेंडली होना बेहद आवश्यक है। इसके अलावा एक्यूरेसी, बेहतर कम्युनिकेशन स्किल्स, आर्गेनाइजेशन स्किल्स, एनर्जेटिक, फ्लेक्सिबिलिटी, टीमवर्क, व क्रिएटिविटी जैसे गुण आपके काम को आसान बनाते हैं।

शैक्षणिक योग्यता

इस क्षेत्र में कॅरियर बनाने के लिए किसी निश्चित डिग्री का होना आवश्यक नहीं है। आपके स्वाद की समझ ही आपको आगे लेकर जाती है। हालांकि, ज्यादातर कंपनियां ऐसे मिक्सोलॉजिस्ट को पसंद करती हैं जिनके पास बारटेंडिंग लाइसेंस होता है। उम्मीदवार किसी भी कंपनी में अल्पकालिक भुगतान प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में भाग लेकर प्रमाण पत्र प्राप्त कर सकते हैं।

संभावनाएं

यकीनन यह एक अलग कॅरियर क्षेत्र है, लेकिन फिर भी अगर आप अपने काम में अच्छे हैं तो आपके पास काम की कोई कमी नहीं होने वाली है। आप बार या रेस्टोरेंट के अलावा, क्लब, पब, होटल, टैवर्न आदि में बेहद आसानी से काम कर सकते हैं। इसके अलावा कंपनियां फूड एंड बेवरेज शो या फिर कई मार्केटिंग इवेंट्स में अपनी सर्विसेज देने के लिए भी मिक्सोलॉजिस्ट को हायर करती हैं। इस तरह के इवेंट्स में आप अच्छी खासी कमाई कर सकते हैं।

आमदनी

एक मिक्सोलॉजिस्ट की सालाना पूरी तरह से उस क्लब / रेस्तरां / बार पर निर्भर करेगा जिस पर वह काम कर रहा है। फिर भी शुरूआती दौर में आप दो से तीन लाख रूपए सालाना आसानी से कमा सकते हैं।

प्रमुख संस्थान

- इंस्टीट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट कैटरिंग एंड न्यूट्रिशन, लखनऊ
- इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट, कोलकाता
- इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट, अहमदाबाद
- नेशनल काउंसिल फॉर होटल मैनेजमेंट एंड कैटरिंग टेक्नोलॉजी, नोएडा
- इंस्टीट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट, मुंबई
- इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमैंट कैटरिंग टैक्नोलॉजी- एप्लाईड नुट्रीसन, कोलकाता
- सेंटमेरी कॉलेज, बैंगलोर
- इंस्टीट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट, कैटरिंग एंड न्यूट्रिशन, शिमला

कैसे बनें लेखपाल? जानें योग्यता, एग्जाम पैटर्न, सैलरी व सभी जानकारी

लेखपाल राजस्व विभाग यानी रेवेन्यू डिपार्टमेंट के अंतर्गत काम करते हैं। लेखपाल को कुछ राज्यों में पटवारी, पटेल, कारनाम अधिकारी, शानबोगरु आदि नाम से जाना जाता है। यह एक सरकारी नौकरी है और इसमें जॉब सिक्योरिटी, पेंशन, पीएफ जैसे लाभ मिलते हैं। आजकल अधिकतर युवा सरकारी नौकरी करना चाहते हैं। लेकिन सरकारी नौकरी पाना इतना आसान नहीं हैं। लेकिन आज हम आपको एक ऐसी सरकारी नौकरी के बारे में बताने जा रहे हैं जिसके लिए आपको ज्यादा मेहनत करने की जरुरी नहीं है। आज हम आपको बताएंगे कि आप लेखपाल कैसे बन सकते हैं - लेखपाल राजस्व विभाग यानी रेवेन्यू डिपार्टमेंट के अंतर्गत काम करते हैं। लेखपाल को कुछ राज्यों में पटवारी, पटेल, कारनाम अधिकारी, शानबोगरु आदि नाम से जाना जाता है। यह एक सरकारी नौकरी है और इसमें जॉब सिक्योरिटी, पेंशन, पीएफ जैसे लाभ मिलते हैं। आजकल युवाओं में इस पद की डिमांड बहुत ज्यादा है। लेखपाल बनने के लिए अभ्यर्थी को लिखित परीक्षा के साथ-साथ इंटरव्यू देना होता है। लेखपाल दो तरह के होते हैं - राजस्व लेखपाल और चकबंदी लेखपाल। राजस्व लेखपाल आवासीय और व्यावसायिक जमीन से जुड़े काम देखते हैं और राजस्व लेखपाल आवासीय और व्यावसायिक जमीन से जुड़े काम देखते हैं।

योग्यता

- आपको किसी भी स्ट्रीम से बारहवीं पास होना चाहिए।
- मिनिमम परसेंटेज की कोई शर्त नहीं होती।
- उम्मीदवार के पास कम्प्यूटर कोर्स का सर्टिफिकेट होना जरूरी है।

आयु सीमा

लेखपाल बनने के लिए अभ्यर्थी की आयु 18 वर्ष और 40 वर्ष के मध्य होनी चाहिए। आरक्षित वर्ग के अभ्यर्थियों को नियमानुसार आयु में छूट प्रदान की जाती है।

लेखपाल बनने की परीक्षा

लेखपाल बनने के लिए लिखित परीक्षा और इंटरव्यू ये दो चरण होते हैं। लिखित परीक्षा 100 नंबर की होती है। इसके लिए 90 मिनट दिए जाते हैं। इसमें माइनस मार्किंग नहीं होती। परीक्षा में हिन्दी, सामान्य ज्ञान, गणित और ग्राम समाज और विकास के प्रश्न पूछे जाते हैं। हर सेक्शन में 25-25 प्रश्न होते हैं। लेखपाल की परीक्षा के लिए सामान्य ज्ञान, हिंदी सामान्य गणित और सामाजिक जीवन से जुड़े प्रश्न पूछे जाते हैं। लिखित परीक्षा में पास होने वाले अभ्यर्थियों को इंटरव्यू के लिए बुलाया जाता है। लिखित परीक्षा और इंटरव्यू दोनों को मिलाकर जो भी मार्क्स मिलते हैं उसी के आधार पर लेखपाल को चुना जाता है।

सैलरी

एक लेखपाल की सैलरी 5200-20200 रूपए प्रतिमाह पे-ग्रेड के अनुसार होती है। लेखपाल एक क्लेरिकल पोस्ट है जो ग्रुप सी के अंतर्गत आती है।

टिफिन सर्विस का बिजनेस शुरू कर कमा सकते हैं लाखों

साफ-सफाई का खास ध्यान रहे और खाना बनाने से लेकर टिफिन डिलीवरी करने वाला व्यक्ति भी नीट और क्लीन रहे। साथ ही टिफिन बॉक्स में बेहतर क्वालिटी का हो, ताकि थाने के संदर्भ में अच्छी राय बने। टिफिन बॉक्स में खाना पैक करते समय इधर-उधर नहीं गिरना चाहिए।

कोरोनावायरस अभी पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है और इस दौर में कई जमे जमाए बिजनेस और दूसरे प्रोफेशनों की कमर टूट चुकी है। कई लोगों की इस आपदा में नौकरी गई है तो कई लोगों का बिजनेस चौपट हुआ है। सबसे अधिक असर पड़ने वाली इंडस्ट्रीज में, फूड इंडस्ट्री पर निश्चित रूप से बड़ा असर पड़ा है। होटल, ढाबे जहां पर लोग इकट्ठे होकर खाना खाते थे, वहां बिजनेस जबरदस्त ढंग से प्रभावित हुआ है। पर लोगों की खाना खाने की जरूरतें तो कम नहीं हुई हैं, ऐसे में कई जगहों पर सुरक्षित टिफिन सर्विस एक बेहतर विकल्प के रूप में सामने आ सकता है। आइए देखते हैं इसकी कहां कहां और किस प्रकार उपयोगिता है और आप इसके जरिए किस प्रकार शुरुआत कर सकते हैं और किस प्रकार कमाई कर सकते हैं।

कारोबार को समझना जरूरी

ध्यान रखने वाली बात यह है कि बिजनेस चाहे कोई भी हो, किंतु उसे समझना एवं प्रबंधित करने का ढंग आपको वास्तविक रुप से उसका फायदा दिलाता है। अगर आप किसी बिजनेस को ठीक ढंग से मैनेज कर पाते हैं तो भारी मुनाफा और अच्छी क्रेडिबिलिटी हासिल कर सकते हैं। आखिर यूं ही तो आईआईएम से बड़े संस्थानों से निकले लोग सब्जी बेचकर या कोई छोटा मोटा रोजगार करके, या फिर खेती करके लाखों नहीं कमाते हैं? उनके कमाने के उदाहरणों से प्रबंधन के गुणों को सीखना जरूरी है।

कारोबार को प्रबंधित करने से पहले कारोबार को समझना और ग्राउंड वर्क करना जरूरी है। आप जिस भी क्षेत्र में रहते हों, आस पास अगर कोई टिफिन सर्विस चलती है तो उसके पास खुद एक ग्राहक बनकर जाएँ और देखें कि वहां पर किस प्रकार से आपको टिफिन दी जाती है, उसके रेट क्या है, सब्जी इत्यादि की वैरायटी क्या है, अलग-अलग दिनों में वेज और नॉनवेज का कॉम्बिनेशन क्या है? इतना ही नहीं, खाने की क्वालिटी कैसी है, डिलीवरी की टाइमिंग इत्यादि किस प्रकार से मैनेज किया जाता है, इन सब बातों को जब एक ग्राहक के तौर पर समझने की कोशिश करेंगे, तो आपको इसकी बारीकियां समझ आ जायेंगी।

कस्टमर मैनेजमेंट और मार्केटिंग

यह एक बेहद महत्वपूर्ण फैक्टर है। जब आप एक कारोबार को समझ लेते हैं और ग्राउंड वर्क कर लेते हैं तो आपके सामने बड़ी चुनौती आती है कि कस्टमर आप किस प्रकार से ढूँढें? तो इसके लिए आपको एडवर्टाइजमेंट करना पड़ेगा। इसके लिए आप खुद कैनवा जैसी ऑनलाइन सर्विस का प्रयोग करके अपनी टिफिन सर्विस का बैनर बना लें और व्हाट्सएप पर शेयर करें, खासकर उन कांटेक्ट में, जिस एरिया में आप बिजनेस करना चाहते हैं। शुरुआत में अगर आप के जानकार और आपके परिचित पहले ग्राहक बनते हैं, तो यह सबसे उत्तम होगा। एक तो ऑलरेडी वह आपको जानते हैं और दूसरे शुरू में विश्वास बनाने में आपको आसानी हो जाएगी। यह कार्य व्हाट्सएप पर आप आसानी से कर लेंगे, किंतु सिर्फ जानकारों में आप यह कार्य बढ़ा नहीं पाएंगे। कारोबार बढाने के लिए आपको पंपलेट छपवाने पड़ेंगे और आसपास के एरिया में डिस्ट्रीब्यूटर करना पड़ेगा। वह हॉस्टल हो सकता है, कंपनी हो सकती है, या कोई लोकलिटी हो सकती है। कस्टमर जब आपके बनने लगेंगे, तो उसको प्रबंधित करने में और क्वालिटी देने में आप चूक ना करें। ध्यान रखें, यह 21वीं सदी है और यहां पर जितनी बेहतरीन क्वालिटी और सर्विस आप देंगे, आपके ग्रो करने की संभावना उतनी ही अधिक होगी। कम लागत के लिए पहले एकाध कस्टमर से ही शुरू करें, और अनुभव के साथ महीने बाद कारोबार को गति दें।

ध्यान रहे कि यह बिजनेस ना केवल शहर में, बल्कि छोटे-छोटे कस्बों और यहां तक कि गांव तक में चलने लगा है। गांव में कई घरों में बुजुर्ग व्यक्ति होते हैं, जो अकेले होते हैं। उनके बच्चे दूर शहरों में रोजी रोटी के लिए गए होते हैं, तो उनके लिए भी यह बेहद उपयोगी सर्विस है। ऐसे में निश्चित रूप से आपको इससे पुण्य और पैसा दोनों मिल सकता है।

कुछ महत्वपूर्ण बातें

- साफ-सफाई का खास ध्यान रहे और खाना बनाने से लेकर टिफिन डिलीवरी करने वाला व्यक्ति भी नीट और क्लीन रहे। साथ ही टिफिन बॉक्स में बेहतर क्वालिटी का हो, ताकि थाने के संदर्भ में अच्छी राय बने। टिफिन बॉक्स में खाना पैक करते समय इधर-उधर नहीं गिरना चाहिए।
- मेन्यू अपडेट करते रहें। साथ ही ध्यान रखें कि स्वाद के चक्कर में ऐसा नहीं होना चाहिए कि कस्टमर के हेल्थ से समझौता हो जाए। कल्पना करें कि अगर कोई खाना खाने के बाद कस्टमर का पेट खराब हो जाता है या उसे अन हेल्दी फील होता है तो आप अपने ग्राहक खो देंगे। हां! स्वाद के लिए अपने मैन्यू में आप कोई मिठाई या दूसरी चीजें अपडेट करते रह सकते हैं।
- कस्टमर के फीडबैक के आधार पर किसी दिन उसकी पसंद का मैन्यू जरूर बना सकते हैं। त्योहार इत्यादि के दिन पूरी या ऐसी दूसरी लोकल डिश कस्टमर को टेस्ट करा सकते हैं, पर यह कस्टमर के फीडबैक के आधार पर ही होना चाहिए।
- समय का पालन बहुत जरूरी है। अगर सुबह ब्रेकफास्ट 8:00 बजे पहुंचाते हैं, तो यह किसी हालत में 8 से लेट नहीं होना चाहिए, बहुत पहले भी नहीं होना चाहिए। समय पर डिलीवरी आपके बारे में एक बेहतरीन राय कायम करेगी। अगर किसी कारण वश देरी होने की सम्भावना है तो व्हाट्सअप या कॉल पर कस्टमर को अपडेट जरूर कर दें।